
कविकुलगुरू - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ गौरीश्रवःकेतकपत्रभंगमाधाय हस्तेन ददन्मुखं वः॥ विघ्नं मुहूर्त्तं कलितं द्वितीयदंतप्ररोहो हरतु द्विपास्यः॥१॥ क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम्॥ अनंतदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिंतामणिमातनोति॥२॥ तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोहिर्गुहो रविः॥ शिवो दुर्गांतको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी॥३॥ नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः॥ सिते सितेशस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः॥४॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| व | ब्र | गो | ग | स | स्कं | सू | शि | दु | य | वि | ह | का | शि | चं | पित्र |

नंदा न शनंदिकाख्या जया चरिक्तान कौ पूर्णा संज्ञास्ता र्कौ न॥ याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्व

द्रा
की
शिवः
२

Acc. No. ~~1754~~ M-1762
Title - मुहूर्त चिन्तामणि
Author - रामदैवज्ञ
Date - शके 1522
Subject - ज्योतिष
folio - 66
Xerox - 130

देवंयनि ष्टार्थ्यमत्ता मेषांसं वैदृग्यनंस्यात।।५।। षष्ठ्यादितिथयोमंदाद्विलोमंप्रति

पद्रुधे।।मन१म्पर्के।१धमा:षष्ठ्या९द्या१मा१०श्वरद्धावने।।६।। षष्ठ्या९ष्टमी८

रूत२७विधिफल्गुये पु३०नोमसेवेतनातेनपलेद्दुरंरतं।।ना म्यांजनंविष्व१२द्दश

१०द्विकौ२तिथ्याचीफलै।स्नानममा३०त्रि१गो८ष्वसत।।७।। सूर्यं१२षा११

पंचा५ग्नि२रसा६ष्ट८नंदा९वेदां४ग६सप्ता१श्वि२गजो८कृ५पोना:१।।सू

र्यो१२ग६सप्तो१रग८गो९द्विगी१७षा१९दग्धा विषाख्या ष्मकृताशा नाश्वा।।८

| र | चं | मं | बु | गु | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नं | नं | नं | नं | त्रि | नं | पू |
| म | चि | उषा | ध | उफ | ज्ये | रे |
| १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ |
| ७ | | | १० | | | |

एषुवारेषु

ष्वमृततिं

दग्धुमानि

कृकचाख्य

गभ्रमा:।।

।।सूर्यादिवारेतिथयो भवंति मघा विशाखा

पिव मूलवन्हि।। ब्रा स्ंकरगे।कीघमघं

टकाश्वश्रुते विवस्यीगमने लवष्टपं।।५।।

भाद्रे चंद्रदृशोर २ नभस्यनल ३ नेत्रे २ माघवेदादशी १२ पौषेवेदा ४ श्रावणे दृषेदश १० शिवा ११ मार्गेद्रि १ नागा ८ मधो ॥ गोरु ७ बौ ८ चो नयु पक्षगा अतिथयः शून्याः बुधैः कीर्तिताः ॥ ऊर्जी बा ८ तपस्यश्च तपसा कक्षे त्रागा ६ ध्व ४ यः ॥ १७ ॥ प्रा कां १४ पंचप

| मासाः | चै | वै | ज्ये | आ | श्रा | भा | आ | का | मा | पो | माघ | फा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्ल | ८ | १२ | १३ | ७ | ३ २ | ९ २ | १० ११ | १४ | ७ ८ | ४ ५ | ६ | ३ |
| कृष्णप | ८ | १२ | १४ | ६ | ३ २ | ९ २ | १० ११ | ५ | ७ ८ | ६ ५ | ५ | ४ |
| नक्षत्र | रो | चि | उषा | फा | उ | श | फला | कृ | वि | आ | [illegible] | न |
| शून्याः | अश्वि | स्वा | पुष्य | ध | अ | रे | ० | म | वि | मू चि | मू | ज्ये |
| लग्नस्र | ११ | १२ | २ | २ | १ | ६ | ८ | ७ | ७ | ४ | १० | ५ |

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श | ताराः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ८ | दग्धाः |
| ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ९ | ७ | विषा |
| १२ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | हुता |
| [illegible] | वि | अ | मू | कृ | रो | ह | यमघं |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ००००० |

शिवः
२

सिनिशाकः १४ घ्नाग्नि ३ विश्व १३ रसात्क्रमात्॥ तथा निंद्यंश्च मेसाधी ह्या दग्धपंचेश्व मादि
मे॥२॥ ११॥ अनुराधा द्वितीयायां पंचम्यां पित्र्यं तथा॥ अनुत्तराश्च तृतीयायां मेकादि
पूर्णा च रोहिणी॥१२॥ स्वाती चित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसो॥ नवम्यां कृत्तिका
ष्टम्यां प[illegible] पूर्णा च रोहिणी॥१३॥ कृदास्ये [illegible] वायु विश्वेभ्यो नगावासवो॥
वै[illegible] श्रुती पाष्णिपो [illegible] अजपादग्निपित्र्ये॥१४॥ त्वाष्ट्र[illegible] वायव्यकीः अ
[illegible] तिमूले यमे[illegible]॥ चैत्रादि मासेष्वन्यास्या स्तारा वित्तविनाशकाः॥१५॥ घटो
ति[illegible] मेषा[illegible] कन्या [illegible] तौलिन: [illegible]॥ धनु: [illegible] कर्के [illegible] मृग:
११ झषो १२ गो [illegible] मिथुनं [illegible] मे[illegible] [illegible] पश्चादिते स्तोजतिथोघटे [illegible] तौ १०
१० सिंह: ५ श्वेत्रादौ [illegible] नरा[illegible] य:॥१६॥ चापे [illegible] नेक [illegible] हरी ५ हयां [illegible] तौ १२
मृगेन्द्र ५ नक्रौ १० मिथुनं [illegible] ने [illegible]

दास्य

ध

गौ॰ २ स्यो २२ चैनेष्टे तिथिर्न स्याद्गमे॥१७॥ नारदः॥ तिथ्योर्मासस्याश्च जन्म लग्न नियान्यपि॥ मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु च॥१८॥ यं वं च कारण लग्न नि मा सपक्षमास्तु राशयः॥ गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिता॥१९॥ वर्जये त्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पंचमी तिथौ॥ भौमाश्विनीं च सप्तम्यां षष्ठ्यां चंद्रेन्दवं तथा ॥२०॥ बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवती॥ नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनि रोहिणी॥२१॥ गर्हृप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमं॥ भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरुपुष्यं विवर्जयेत्॥२२॥ प्राप्तं दारुणः १ का॰ न दंडुष्प २ च॰ मृगो ३ धाता ४ सौम्यो ५ वा॰ शा॰ ६ केतु ७ क्रमेण॥ श्रीव

| १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | तिथ्यो भोग्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २<br>१० | ५<br>१० | ३<br>६ | ९<br>४ | ४<br>५ | ८<br>१२ | २<br>१२ | जन्मलग्न |

शिवः
२

5

सौ८ ध्वांक्षं ध्वजं९ मुद्गरश्च १० छत्रं ११ मित्रं १२ मानसं १३ पद्म १४ लुंबो १५॥२३॥
उत्पात १६ मृत्यु १७ किल काण १८ सिद्धी १९ शुभो २० मृतास्यो २१ मुसलं २२ ग
दश्च २३ मातंग २४ रक्ष २५ श्चर २६ सुस्थिराख्यः २७ प्रवर्द्धमानाः २८ फलदाः
स्वनाम्ना॥२४॥ दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद्बुधे॥ मैत्राद्गुरौ भगो
वैश्वाद्ज्ञ पामंदे चवारुणान्॥२५॥ ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चैषु पनाडी पोव ज्यी वेदाः४
पद्मलुंबे गदेश्वा३ धूम्रे काणे मौसले भू१ द्वयं२ रक्षो मृत्युत्पातकालाः
श्चसर्वे॥२६॥ सूर्ये नाडेंद्र ४ गो५ तर्के ६ दिग्वि१० श्वा१३ नख२० संमिते॥ चं
द्रर्क्षैरविर्योगास्यु दोषसंघविनाशकाः॥२७॥ सूर्ये ३ के मृतो तरपुष्य हस्त
१ वं दैश्रुति ब्राह्मं पौष्णी नाभेत्रम॥ सौमेरवादित्यबुध्यकृष्णानु मार्पी स्ने ब्राह्म
मैत्रार्क कृष्णानु चान्द्रमू॥२८॥ जीवे सप्ते मैत्राश्वादितीज्याचि षण्म५ शुक्रे सप्ते

त्रास्पदितिष्यवोनां॥५॥ शनौ श्रुतित्रासमसमीरतोनिसर्वार्थसिद्धेकथितानिपूर्वैः॥
२८॥ द्वी पूर्णातो याह्यमघावातौ हस्तमांच्च ब्रासासुष्णार्द्यमशीयुगर्भैः॥ उत्पा
ता ख्योमृत्युकाणौ च सिद्धिर्वीरे ५ क्रांघेतस्फुलं नामतुल्यं॥२७॥ कुयोगाः
तिथिवारोत्थास्तिथिनोत्थाजवारभोः ग – नवांगरवसेष्ठववज्जीह्निलयमो
त्तपः॥ २९॥ सर्वास्मिन्विधु पापयुक्तनुलवाद्दै निपाको घटी त्रांशवेकुनवां
शांके ग्रहत्ताम: पूर्वैर्दिनानीत्रयं॥ उत्पातयदतोद्दि ७ शानिमृनदीस्यातेष्ठ दु
ष्टं हिनं षण्मासं यदृत्तिन्नतंस्य जन्मनेषौ ह्रुतयोस्यातनं॥ ३०॥ नेष्टं यदर्द्धसं
कलाद्धं पादयासे क्रमात्तर्कैदगुलेदुनु ९ मासानृ॥ पूर्वं परस्तादुनयोस्त्रिघस्रा
यस्तेस्तगेच्चास्युदितेर्द्धवंडे॥३१॥ जन्मर्क्षमासतिथयो धृति पातनक्षत्रवैधृत्य

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श | वारेषु॥ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विशा | पूषा | धनि | रेव | रोहि | पुष्य | उफा | ॥उत्पातः॥ |
| अनु | उषा | शत | अश्वि | मृग | आश्ले | हस्त | ॥मृत्युः॥ |
| ज्ये | अभि | पूभा | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ॥काणः॥ |
| मूल | श्रवण | उभा | कृत्ति | पुनर्वसु | पूफा | स्वाती | ॥सिद्धिः॥ |

मापितृदिनानि तिथेः क्षयवृद्धिर्न नाधि
मासकुलिकुप्रहराद्धपातविष्टुंनेवक्त्र
घटिकात्रयमेवव र्ज्यो॥२७॥ परिघार्द्धं ३०
पंचपूर्वे लेच घट ६ गंडातिगंडयोः॥ व्या
घातेनव नाडपश्चवर्ज्या सर्वेषु कर्मसु
२५॥ वेदा ४ गा ६ षू ८ नवा ९ कैं न्द्र २।१४
पक्षरंध्रतिथ्यो त्यजेत्॥ वस्व ८ का ९ म
नु १४ तत्वा २५ षा १० शराप नाड्यः परा
ग्रुजाः॥२६॥ कुलिकः कालवेलाच य
मघंटश्चकंटकः॥ वाराद्विघ्ने क्रमान्मं

दे बुधे जीवे कुजे क्षण: ॥ ३७ ॥ सूर्ये षट् ६ स्वरै नाग ८ दिक् १० मनु १४ मिताश्चन्द्रेब्धि
४ षट् ६ कुञ्जरा ८ का ९ र्की १२ विश्व १३ पुरंदरा: १४ क्षिति सुते घ २ व्धि ४ त्रि ३ तर्क ६ दि
शः १० ॥ सौम्ये य २ ब्धि ४ गजा ८ क ९ दि १० मनु १४ मिता जीवे द्वि २ षट् ६ भास्करा:
१२ ॥ शक्रा: १४ स्यास्तिपय: १५ कलाच १६ न्मगुजे घ २ व्धी ४ षु ५ तर्क ६ ग्रहा:
९ ॥ ३८ ॥ दिग १० भास्करा १२ मनु १४ मिताश्चपानौ शशि १ द्वि २ नागा ८ दिशो
१० नव ९ दिवाकर १२ संमिताश्च ॥ दुष्टक्षण: कुलिक कंटक काल वेला सु
श्चार्द्ध याम यमघंट ५ गता: कलां १४ शा: ॥ ३९ ॥ विपाशे रावती तीरे शतद्रा
श्च त्रिपुष्करे ॥ विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकं ॥ ४० ॥ मत्सु क
र्कचिद्दग्धादिनिंद्यो ष्यास्तेषु नानुजगु: ॥ केचिद्ग्रामो नरं चा से यात्रा यां मे
व निंदिता न ॥ ४१ ॥ प्रयोगे सुयोगो पि चेत्स्यात्त दानी मयोगन्निहत्येष सि

शिव:
५

९

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श | एषुसर्वेषुदुष्टकाल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | कुलिककंटक |
| ८ | ६ | ४ | ४ | ६ | ४ | ८ | ॥कालवेला |
| ८ | ८ | ३ | ८ | १२ | ५ | १० | ॥यामार्द्ध॥ |
| १० | ८ | ६ | ८ | १४ | ६ | ११ | यमघंट |
| १४ | १२ | १० | १० | १५ | ८ १० | १२ | दिनषोडशांश |
| ० | १३ १४ | ० | १४ | १६ | १० १४ | ० | |

छिंतनीति॥ परेलग्नस्तु सौकु
योगादिनाशंदिनार्द्धेतरंवि
ष्टिएवंचशस्तं॥४२॥ अर्केके
एवीर्द्दे५ष्टमीपंचदष्टेपानीरे
कादष्टपंचतुर्थ्यपरार्द्धे॥ क्र
मे ३सार्द्धेस्पात्तीयाद्दग्रा
म्पो: एवंजागेसप्तमीपांनुति
थ्यो॥४३॥ पंच५ द्व२ त्रि१ कृ
ता४ ष्ट८ राम३ रस६ रुद्र२ यामा

दिघस्य:शरा५विष्टेरासमसज्जो८नु१रस६रामा३प्र१श्वि२बाणा५ध्रि४षु॥
यामेषुघस्रघटीत्रयंप्रशुनकरंपुच्छे तथा वासरे विष्टिस्त्रियपरार्द्धजाप्रशुनकरी रात्रौ
तु पूर्वार्द्धजा॥४४॥ कुंभकर्कद्वयेम
र्त्ये स्वर्गे ऽजा त्रयेलिगे ८ स्त्री ६ घ
नुर्ज्जूके १ नक्रे १० चैव प्राप्त त्रैव तत्फ
लं॥४५॥ वाप्यारामकं तडागकूपभ
वनारंभप्रतिष्ठे व्रतारंभोत्सर्गविधूत्स
वेशनमहादानानि सोमाष्टके॥ गोदा
नाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्र
तं नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्का

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उ | फ | उ | फ | ॥शुक्लपक्षे॥ |
| ४ | ८ | १२ | १५ | |
| ५ | २ | ७ | ४ | ॥एतन्मुहूर्तादोषकृं सं |
| ८ | १ | ८ | ३ | ~~कृष्णपक्षे~~॥पृष्ठं |
| उ | फ | उ | फ | कृष्णपक्षे॥ |
| ३ | ७ | १० | १४ | ~~एतन्मुहूर्तादोषकृं~~ |
| ८ | ३ | ६ | २ | एतन्मुहूर्तादोषकृं |
| ७ | २ | ५ | ४ | एतन्मुहूर्तादोषकृं |

शिवः
६

रात्सुरस्थापनं॥४६॥ दीक्षामौंजिविवाहमुंडनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं संन्यासा
ग्निपरिग्रहो नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमं॥ चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वे
धं न कुर्यात् बुधो वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा॥४७॥
अस्तेवमीसिंहनक्रस्थजीवे वृश्चिके चिह्नगे चातिसारे॥ गुर्वादित्ये विश्वघस्रेपि
पक्षेचैतत् वर्जयेद्रत्नादिभूषां॥४८॥ सिंहेगुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोथ गो
दोत्तरतश्च यावत्॥ भागीरथीयाम्यतटे च दोषो नान्यत्र देशे तपनेपि मेषे
॥४९॥ मघादिपंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निंदितः॥ गंगागोदांतरं हित्वा
शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥५०॥ मेषेर्के सत्युद्वाहो गंगागोदांतरेपि च॥ स
र्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिंगेगौडगुर्जरे॥५१॥ रेवापश्चिमेचशोणस्योद
पूर्वेगंडकी।

गर्ह्यितो नीचवृत्तयः ॥ वर्ज्यो नीयं कोंकण मागधेच गौडो सिंधोवर्जनीयः श्रुतेषु ॥ ५२॥ गो २ जा ८ म १२ कुंभे ११ तरमेति श्वार्ह गो नी एवं वृश्चिक ३ शिंगुरु रेतिवक्रि नः ॥ तदापि तुष्टा दृष्टा हातिनि नित्यतः श्रुतेषु रेवा सुरनिम्नगां नदी ॥ ५३॥ पादोन रेखा परस्वं वियोजनैः पलैर्युतो नास्ति पयो हि नाड्यैः ॥ ७ उत्ताधि काप्लवद्विवरोजवैः पलैरूर्ध्व तथाधो हि नपत्रवेशनं ॥ ५४॥ वारादर्घी हि काढिनः स्वाप्स ५ हच्छेष वर्जिनाः ॥ सैकास्तष्टा नगैः कालहोरा स्युर्दि नपात्क्रमात् ॥ ५५॥ वारे प्रोक्तं कालहोरासुतस्या चिह्न्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यं प्राकेस्य ॥ कुर्याद्दिक्छूलादि चिंतं संलक्ष्ये ध्रुवो नैवोक्तं पारिघश्चापि दंडः ॥ ५६॥ मन्वाद्या स्त्रि २ तिथी १५ मघौ तिथी १५ रवौ १२ ऊर्जे ज्येष्ठे चौदिक १०

श्रीवः

ॐ

तिथी॥ ज्येष्ठेसचतिथी ११ त्विषेनव ८ तपस्यपक्षाः ७ सहसोऽपि वाः ११ नार्के
ग्रिकृष्णसिते त्वमा ३० इनभसः इष्मे युगांशासिते गो ९ न्मो २ बाहुजराघयो
र्मदन १३ दशौ ३० भाद्रमाघासिते॥ ५॥ इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञराम
विरचिते मुहूर्तचिंतामणौ शुभाशुभप्रकरणं प्रथमं॥ १॥ अथ न
क्षत्रप्रकरणम्॥ नासत्यां १ तक २ वह्नि ३ धाता ४ प्राणपा ५ रुद्र ६ दिती ७
ज्योरगा ८ अश्लेषाः पितरो १० भगो ११ र्यम १२ रवि १३ त्वष्टा १४ मृगा १५ श्र
क्रमात्॥ शक्राग्नी १६ खलु मित्र १७ शक्र १८ निर्ऋति १९ सीराति २० विश्वे

| अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | अ | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | ध | श | पू | उ | रे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नासत्य | यमः | वह्नि | ब्रह्मा | चंद्रः | अदि | गुरुः | सर्प | पित | पित | [illegible] | [illegible] | र[illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

रुद्रः अदिति गुरुः सर्प

२१ विधि २२ गोविंदो २३ वसवो २४ वुया २५ अजचरण २६ हिर्बुध्न २७ पूषा २८ इति
धाः॥१७॥ उत्तरात्रय रोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरं॥ तत्र स्थिरं बीजगेहशांत्यारा
मादिसिद्धये॥ २॥ स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चंद्रश्चापि चरं चलं॥ तस्मिन् गज
आदिकारोहवाटिकागमनादिकं॥ ३॥ पूर्वात्रयं याम्य मघे उग्रं क्रूरं कुजस्त
था॥ तस्मिन् घातानि शाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्धति॥ ४॥ विशाखाग्नेय भे
सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतं॥ तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादिसिद्ध
ये॥ ५॥ हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा॥ तस्मिन् पण्यरति
ज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकं॥ ६॥ मृगांत्यचित्रामित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्त
था॥ तत्र गीतांबरक्रीडामित्रकार्यविभूषणं॥ ७॥ मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरि
स्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकं॥ तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकं॥ ८॥ मूलो

पृ

शिवः
८

हि मिश्रो ग्रमधोमुखं नवेद्धी स्पमार्द्रे अहरित्रयं ध्रुवं॥ तिर्यङ्मुखं मैत्र करा
निलादिति त्ये ष्टाश्वि नानीदृश कुस्पजेषु सताः॥ शेषास्त्र ध्रुवाश्विकरपंच
कवा सवे ज्यादित्य श्रवाजरदसरवखवली वस्त्रं॥ धार्यविरक्त शानिचंद्रकुजे

| ध्रुवं | चरं | उग्रं | मिश्रं | क्षिप्र | मृदु | तीक्ष्ण |
|---|---|---|---|---|---|---|
| स्थिरं | चलं | क्रूरं | साधा | लघु | मैत्रं | दारुण |
| उ.फा | स्वाती | पू.फा | विशा | हस्त | मृग | मूल |
| उ.षा | पुनर्व | पू.षा | कृत्ति | अश्व | रेव | ज्येष्ठा |
| उ.भा | श्रव | पू.भा | ०० | पुष्य | चित्रा | आर्द्रा |
| रोहि | धनि | भर | ०० | अभि | अनु | आश्ले |
| रवि | शत | मघा | ०० | ००० | ०० | ००० |
| ००० | चंद्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |

॥ अधोमुखानि॥
मूल। अश्ले। कृत्तिका
विशा। पू.फा। पू.षा।
पू.भा। भरणी मघा
॥ ऊर्ध्वमुखानि॥
आर्द्रा। पुष्य। श्रवण
धनिष्ठा। शततारा। रो
हिणी। उ.फा। उ.षा।
उत्तराभाद्रपद

॥ तिर्यङ्मुखानि॥
चित्रा मृग पूर्व रेव
ती॥ अनुरा। हस्तस्वा
ती पुनर्वसु ज्येष्ठा
॥ अश्विनी॥

| ॥ देवाः | राक्षसाः ॥ | ॥ देवाः ॥ |
|---|---|---|
| ॥ नराः | राक्षसाः | नराः ॥ |
| ॥ देवाः | राक्षसा | ॥ देवाः ॥ |

क्षिरर्क्षं भौमे भ्रूकवादिति पुनर्मृगानत्व्यातं ॥ १०॥ वु
स्त्राणां नव नागकेषु च चतुष्के णेमराराक्षसाः मध्यत्र
श्रुगताः नरास्तु सरणे पाश्रं चमध्यां प्राप्ते ॥ देवास्तु
दितें वरेनवत्तरेपंकादि तिलेनेन सद्रक्षोगणेन सुरापूयाः
शुभमसत्सर्वाश्राकेप्रांततः ॥ ११॥ विप्राज्ञया तयो द्वा
दशराज्ञाश्रीस्वार्पितं चयतां ॥ निंद्येपि वारदोवस्त्रधार्यं जि
गबुधाः ॥ १२॥ राधामन्नम्भ्रदुःक्रवर्ह्नवरुण हस्त्रैलेना पाद्यारोपोषणं पदर्शनं
क्रवमुद्रुक्षिप्रश्नवोवासवैः ॥ तीक्ष्णोग्रांबुपनेषुमद्यमुदितं लक्षिप्रांस्यवकौ हुना
दित्यें द्रांबुपवासवेषु दिगवांप्राप्तः क्रयोविक्रयः ॥ १३॥ लग्ने शुभे ...

शिवः
२

17

त्वा

ह्निसंयुते रसापभ्रूतां निजपो नि नेचरे॥ रिक्ता ष्ठमी दर्शी कुजश्च वो भ्रवद्धेषु यानस्थि
तिर्वेशनं नसत्॥१६॥ नैधज्ञंसमतयुग्मद्रचरेस्रजनेधंगलग्ने शुद्धे ज्ञेविद्धिच
दिवसे चापि नेषां रवेश्च॥ शुद्धे रिपु॥१८ द्युनेमति॥१९॥ हे स्तनियोनाजनेने सू
चीक मीष्प हित्ति वसुनेतस्र मित्राश्चि पुष्ये॥ २०॥ क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे
क्रयोपि न॥ पौष्णां वुपाश्चिनी वातश्रवचित्राः क्रयेशुभाः॥२१॥ पूर्वी द्वीषाकृशा
नुसार्पयमने के न्त्रिकोणे शुभैः षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विनाघटतनुसस्निक्रय
सत्तिथौ॥ रिक्ता भौमघटान्विना चविपणिमैत्रे ध्रुवक्षिप्रचैर्लग्ने चंद्रसितेव
याष्टारिहिते: पापैः शुभैर्धीरव्य २२ रवे॥२०॥२१॥ क्षिप्रांत्यवश्चिंदुमरुज्जलेश
दित्येषु रिक्तारहिने प्रशस्तं॥ स्याद्धाजिदन्ते त्वथदन्तिकार्यं कुर्यान्मदुस्वि

प्रचरेषु विद्वान् ॥१८॥ स्पाडूषाघटनंत्रिपुष्कर क्षिप्रभ्रूवे रत्नयुक्त नीक्ष्णांयवि
हीनभेरवि कुजेमेषालिसिंहेलनौ ॥ नन्मुक्ता सहितं चरभ्रूवमृदुक्षिप्रेश्रुतंस
त्तनोती स्त्रोग्याम्बिमग छिदैवदृहनेषूास्तंश्रुतंघट्टिते ॥१९॥ मुद्राणां पातनं सत
भ्रुवमृदुचरनाक्षिप्रसैवीदुसौरेघस्त्रेफणी जयारवौ नचगुरुस्त्रगुणासे विल
ग्नेश्रुभैः स्यात् ॥ वस्त्राणांक्षालनंसहसुदृयादिनहस्तंचकाद्दिसपुष्येनोरिक्ता
पर्वषष्ठी पितृदिनरविजंज्ञेषुकायंकिदापि ॥ २०॥ संधायीः कुंतवर्मेषिसनषा
रत्नूपाणासिपुत्र्याविरिन्त्रेरूक्ते ज्याके भिमेत्रभ्रूवलघुसहितादिसशाक्र
छिदैवे ॥ स्पुलीग्नेहिस्थिरारवेषुष्णि निचश्रुनदृष्टेश्रुनेः वेलग्रेः स्याद्रोगः प्रा
य्यांसनादिभ्रुवमृदुलघुहर्णतिकादिसदृष्ट ॥ २१॥ अंयास्तंवसुपुष्ययान्त

शिवः
१०

जलनदीशं स्तनार्यम्णभंमंदाश्वंरविविश्वमैत्रजलयाम्नेषाश्विचंद्रंभवेत्॥ मघा
क्षांशिवपित् जैकचरणा त्वाष्ट्रं रविधंतकं स्वक्षं ह्मात्यादितिभ्रवोदनन्नादिवु
ध्मयरक्षो भगं॥२२॥ विनाशृर्ग्यस्मलानौ धेष्णी घ्रंमंदेप्रयलनः॥ स्यादृरेश्रवणं
मधेम्भ्तशाही नमुलोचने॥२३॥ तीक्ष्णमिश्रध्रुवो येर्य द्रव्यंदत्तंनिवेशितं॥ प्र
युक्तं चवि नष्टं चविश्र्पांपातेच नाप्यते॥२४॥ मित्रार्कध्रुववासवांवुपमघांतो
यांत्यपुष्यांदुनिः पापेष्टौ नवलेस्तनौसुरगुरौज्ञेवा न्गोरवे॰विधौ॥ प्रायेसर्व
जलाश्रयस्परवननं वंभोमघेः सैंदभैः स्तेनस्तंसहिबुको ४ प्रुभेमनु॰ गहे
ज्ञेऽजेज्ञराशौ शुभं॥२५॥ क्षिप्रमैत्रेवितिसिलार्के ज्मवारे सौम्येनग्नेर्वे कुजेवारव
१०लाने॰योनेर्मैत्रांराशिपोष्मांपिमैत्रांसेवाकार्या स्वामिनः सेवकेन॥२६॥

| ॥अंधाक्षं॥ | ॥मंदाक्षं॥ | मध्याक्षं | ॥स्वक्षं॥ |
| --- | --- | --- | --- |
| ॥धनिष्टा॥ | ॥हस्त॥ | आर्द्रा॥ | ॥स्वाती॥ |
| ॥पुष्य॥ | उत्तराषाढा | ॥मघा॥ | ॥पुनर्वसु |
| ॥रोहिणी॥ | ॥अनुराधा | पूर्वाभाद्र | ॥श्रवण॥ |
| पूर्वाषाढा | शततारका | ।चित्रा ज्येष्ठा | कृत्तिका उत्तराभा |
| विशाखा रेवती | आश्लेषा अश्विनी | ॥अभिजि | ॥मूल॥ |
| उत्तराफा | मृगशिर | भरणी | ॥पूर्वाफा |

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कृ
त्तिकायाम्य चरे लग्ने धर्मे सुता
ष्टम शुद्धि सहिते द्रव्य प्रयोगः शु
भः॥ नारद्याशुचमणं तु संक्रमादि
ने वृद्धिकरे कैक्रियमहंशो भुज
ये न्नृणं न च कुर्यात् देयं कदाचिद्धनं
॥२७॥ मूलद्वीशमघा चरध्रुव
मृदुक्षिप्रे विना र्क शनि पापे र्द्धि
न ब्रलैर्विधौ जललवे ग्रुकेवि

शिवः
१२

पृ॰

धौम्यं मते॥ लग्ने देवगुरौ दृलप्रबहृलंग्न लग्न सिंहे घटे १ कर्कीऽजेन १ घटे १ न

नौस्य कुर्वं रिक्ता मुषष्यपात था॥ २८॥ एष्वेवस्तु तिवारुण्णादि ति विंस्वातु निनो

मंविनाबीजोप्तिगीदिताश्च नात्वशुन तो ष्टर्गनी २नु१रामें ३ दव: १ ।रामे १ न्दु१

ग्नि २ युगा ४ मस च्छु न कराणपुसौर लेकी ञ्जिनान्ना धामा १९८ नवा १९८

मानि मुनिभि: प्रोक्तान्य समस्तानि च॥ २९॥ पूर्वाश्वान्मित्र कनात द्वयं नुपलघु

श्रोत्रेश्चिरामो स्पाणं नौ मार्के न्यदिने विरेक मनाघं स्या द्युधार्की विना॥ मित्रक्षि

प्रचर क्रूवेर विश्वनाहे लग्नवर्गे विदो जीवस्थापित नो १ गुरुनिगदितो धर्म्मी

क्रिया तद्धले॥ ३०॥ तीक्ष्णाजपाद करवाऽच्छि वसुश्रु तीदुस्वाती मघो नरजलां

तक न क्षपुष्ये॥ मंदारारिक्त रहिते दिवसे तिशस्ता धान्यच्छिदानि गदितेष्विय

रभेविलग्ने॥२१॥नाग्पार्श्वमश्रुतिमघेंद्रविधात्मूलमैत्रां स्वभेषुगदितं कुणम
र्दनंसतत॥ द्वीषुश जपा॥ निर्ऋतिधात्पाताय्यमर्क्षेमिसमस रोपणमिहाद्धि कुजौ
विनामतु॥२२॥ मिश्रोग्ररौद्रभुजगेंद्रविनिंनाधिष्ण्य कूकी ४ज १नो॥ लि १र
हिते चतनौ ग्रुभाहे॥ यात्यास्थितिः स्तनकरीगदिता क्रवेल्मध्री ग्रोन्द्र दस्त्र चर
भेषु चंधान्य वृद्धिः॥२३॥ क्षिप्र क्रवां स्व चरमित्र मघा सुभास्त स्पा॥ च्छिं तिकंस
दृच मंगलपौष्टिकान्यां॥ रवे १० केंविधो सुरव४ गते तनु १ रोगयु रौ भौमो॥
दिदुष्ट समयेस्त्र नरर्दं निमित्ते॥ २४॥ सूर्योनात्रिशुत्रिभेचन्द्रेसूर्यविच्छक्रपं

| गवः॥ ८ | ३ | २ | ३ | १ | ३ | २ | ३ | ४ | ५ | ८ | ८ | ८ | सूर्यो | र | बु | शु | चं | मं | मं | श | रा | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ शु | ऽ | शु | अ शु | ऽ | शु | ऽ | शु | ऽ | शु | ऽ | | | भोग्यं | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ॥ राद्रु नाडी जो लानि ॥ | | | | | | | | | | | | | इ भो<br>होमा | | | | | | | | | |

शिवः
१२

23

चंद्रे रेवत्यां गुरौ शिखिनोने शुद्धे मा कुतिः स्वले ॥ २५ ॥ मैत्रे का तिथि वीरयुता कृ ना ४
मा क्षे षे गुत्ते ३ न्त्रे० नुवि वाजित्वा सः ॥ मो रम्याय हो मेषा शि १ युग्म क्षे षेत्राणार्थे
नाशो दिवि मतने च ॥ २६ ॥ न वानं स्याच्चरात्क्षित्र म दुने स त्त नौ ष्टु नं ॥ विनानं
दाविषघटी मधुपो षा कि भ्रामि जा नूः ॥ २७ ॥ याम्य नयविशा रवेन्दु सापि मित्रेश
जिं न नो ॥ म ग्विज्यार्क दिने नौ का घट नं स त्त नौ ष्टु नं ॥ २८ ॥ मू ना डी नरली
पित्र्यम गे सौ म्य घटे त नौ ॥ सुरवे ४ भ्रु कृ ष मे नाभ्र कृ सिद्धि वीरा त्रिचारयोः ॥
२९ ॥ खं त्वा दिति भ्रुव मघा नि ल सार्पी घिं स्मे रि क्षे तिथौ च रत नौ विं दु वारे ॥ स्ना
नं रुजा विरहित न स्य ज न स्य शस्तं ही ने विधौ रख ल रव गे र्न व १९ कें द्र कौ ॥ ४० ॥
म दुष्कृ व ल्लि प्रच रे ज्ञे गुरौ वारवा १० नग्न गे विधौ ज्ञ जीव र्ग स्थे प्रि त्म वि

घा मघा स्पते॥४१॥ सुरेज्यमित्रागेषु चाष्टमार्त्तेति लेट्टौ। अक्रूरदृष्टे तनौ सौम्यवारे सं
धानमिष्यते॥४२॥ मन्क्राष्ट८ नूतन९ शानि विष्टि कुजान् जनुर्न मासोम्म तौ नवविवि
ध...पिभानि नाडुपाः॥ त्वंगे चरेत नुलवेशा पी जीवताराश्रु होकरादितिहृदि। द्रव्य
पेपरीक्षा॥४३॥ मया १२ षट् ८ म्लक्षेपन्त्यये ३।६।१०।११ लग्नगेष्वनदृग्युते॥ चंद्रे
त्रि ३ षट् ६ दश १० य ११ स्थे सर्वारंभः प्रसिध्यति॥४४॥ स्वाती द्रयुर्वाणिवसा
र्पिभेम्मतिज्ज्ञेरे ५ न्समैत्रे स्थिरतानवेद्युजः॥ याम्यश्रवो वारुणतक्षनेषिवा
११ घस्रादिपक्षो घाधिपार्कवासवे॥४५॥ मूलाग्नि दास्रनव ८ पित्र्य नेन रवा
२० बुध्मार्यमेज्यादितिधात्र नेनगाः॥ मासोऽज्ञ ४० वैश्वे द्र्यमादि मूलनै
मिश्रप्रापित्र्ये फाणि दृष्टा नेम तिः॥४६॥ रौद्रादित्याक्रांवुपया म्पर्की द्विदै

शिवः
२२

ववस्वाग्नि षुवापवारे ॥ स्किा ४।८।१४ दरी ०२ स्वं दद दिनेच रोगे श्री घ्रंजवेद्रो
गिज नस्य मृत्युः ॥४७॥ क्षिप्रादिम लें द्दरी प्रावायुजे प्रेतक्रियास्या ज्ञा षकुंज
गेविधौ ॥ प्रेतस्य दाहं यमदिग्णमंत्यजे तृशाय्याविना नंग हगोप नादिकं॥
४८॥ स्त्रयीक्षी इस नैरभृस्थ लगतैः पाकोरमैः संयुतः शीर्षयुग्म शमितैः
णबस्प दद नंमध्यगैः सर्पभीतिः ॥ प्रागाप्णादिषु वेद ४ नैः स्वसुहदां स्पा त्सं
गमो रोगनीः काय्यादेः करणं सुरवं वगदितं काशादिसंख्यापनो ॥४९॥ नप्रति
थी २।१।१२ रविजन्मतनयार्क वारे द्वीशार्य्यमाजचरणादिति वाह्निवैश्वात्रे
पुष्करो नवतिमत्यु विनाश वृद्धौ त्रैगुण्य दोद्विगुण लवसुतक्षचांद्रे ॥ ५०॥
श्रु कारा विदर्श ३० मत १४ मद ने ०२ नं दासु ०।६।१०।श्री होम

स्कृ ४ समभूत
४ स्मभून ४ स्व

ग्रन्ते पौष्णे वारुण्ये त्रिपुष्करादिने न्यूनाधिमासे ऽयने। याम्ये द्वास्यर तष्वपातपरिघे दि
वैज्यप्युक्रास्तगे मज्ञवैधृतयो श्रावप्रति कृते दीहीनपक्षे सिते॥ ५१॥ जन्म १।१०।१९
प्रत्यरि ५।१४।२३ तारयो मितिथ्युरवां ४ ते ऽ २२ जैत्र कन्तुर्न मलमध्यो मैत्र भगादि
ति ऋब विपात्वाब्धाग्निनेत्रेपि च॥ अष्टो ऽर्के ऽपि विधोर्दिने श्रुति करस्वा सप्ति पु
ष्ये तथा त्वाष्ट्रो चा ऽन्यतरे ऽपि वाय्यम रविलग्नमध्येय थासंभवं॥ ५२॥ अथ गण्डान्त मूलं
घटिचतुष्टयं ज्येष्ठां त्यमूलादिजं वदिनारदः॥ वासिष्ठ एक द्विघटीमितं जगौ
बृहस्पति स्त्वेकघटीप्रमाणकं॥ ५३॥ अथो चुर मेप्रथमाष्टयष्टी मूलस्य पा
क्रांतिमपंच नाडपः॥ जातं शिशुं तत्रपरित्यजे द्वामुखं पिता स्याष्टम मानप
शुपतन्॥ ५४॥ अथाद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये॥ धने

शिवः
२४

४

चतुर्थी ३ स्फ्पगुनेषु शंस्या सर्वत्र सत्स्यादहि भो विलोमं ॥ ५७ ॥ स्वगेष्ठिजुन्निप्रोष्ठप
दे च माघे मूलं मुदिज्ञा वण चैत्र पौषे ॥ कुर्जेपि धन्या तु तपस्य मार्गे विशेषणरव्युचक्रे
घप्स्नु तं नृतत्र ॥ ५८ ॥ गंडांते न्द्र नमूलपालपरिघव्याघात गंडा व मेसंक्रांति व्य
तिपात वैधृति सिनीवाली कुहूदर्शिके ॥ वज्रे कृष्ण चतुर्दशी युयमघंटे दग्धयो
गे मृत्यौ विष्टौ मोदर नेजनि नीपित्र्ते प्रास्तापुना प्रोतिनः ॥ ५९ ॥ त्रिशूल्यं २ ग १
पंचाप ग्नि ३ कु १ वेद ४ वह्नयः ३ शरे ५ षु ५ नेत्रा २ श्विन २ शरें ५ दु १ भू १ कृता: ४
वेदाग्नि ३ रुद्रा ११ श्वि २ यमा २ ग्नि ३ वह्नयो ३ ब्धयः ४ शतं १०० द्वि २ द्वि २ रदा ३२
नतारकाः ॥ ५८ ॥ त्र्यश्वादि स्वपंतुरगस्य योनी २ सोरे ३ न ४ एणास्य ५ मत्ती ६
गरुं ७ चा ॥ ८ षमूचक्रे ९ नवनेच १० मंचः ११ शय्या १२ करो १३ मौक्तिक १४

| अ१ | भ२ | कृ३ | रो४ | म५ | आ६ | पु७ | पु८ | श्ले९ | म१० | पू११ | उ१२ | ह१३ | चि१४ | स्वा१५ | वि१६ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | श्र | ध | श | पू | उ | रे३२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्वमुख | योनि | छुरा | शाकट | दामि लीमुख | मालि | गदा | शर | चक्र | शाला | मंच | शय्या | हस्त | मौक्तिक | प्रवाल | तोरण | वालि | कुंडल | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | मंच | यमल | मर्दलो: |

दिङ्मंच ५१ ॥ ५२ ॥ तोरण २६ वालिनिभं २७ चकुंडलं १८ सिंहपुछ १९ गजदंत २२ मंचका: २२ आस्त्रि चत्रिचरण न २३ मर्दलौ २४ वृत्त २५ मंचक २६ यमा मंच २७ मर्दला: ॥ २८ ॥ ६० ॥ अथ देवालयारामजलाश्रयप्रतिष्ठा ॥ जलाश्रयाराम सुरप्रतिष्ठा सौम्याय ने जीवशशांक शुक्रे ॥ दृष्टे मदुष्टिप्रचरध्रुवेष्णास क्षे सितेस्वर्क्षेतिथिलग्ने वा ॥ ६१ ॥ रिक्तार वर्ज्ये दिवसे तिश्रस्ता शशांकपापे

शिव: २५

स्त्रिनवां ११गमंस्थे:॥ अष्टां ८ त्स १२ गेः स तव चरे मिगेंद्रे ५ स्रयोघटे ११ कोयु
वतो ६ च विस्मु:॥ ६२॥ शिबो स्युग्मे ३ दिन मीच ३।५।४।१२ देवगु: सुहाश्वरे ॥
४।१।१० सर्वद्रुमे स्थिरर्से॥ २।५।८।११ पुष्यायर्दा विषमपयसमर्पभेन्ता द्यौं से
भ्रवणेज्ञिनख्य॥ ६३॥ इति श्रीदैवज्ञानंतसुनदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिं
तामणो नक्षत्र प्रकरणं॥ अथ संक्रांतिप्रकरणं॥ घोरा र्कसंक्रमणे मुगैरं
वोदिस्रश्च ध्वांक्षी विप्रोलघुवियौ च चरक्षैजौ मे॥ चौरा न्मही दस्युतानृपती
न् ज्ञ मैत्रे मंदाकिनी स्थिरचरो सुखयेच मंदा॥ १॥ विप्राश्रुभ्रमिश्च भं नगो
नृपग्नश्च मिश्रा तीक्ष्णा र्केजैं सज सुखाय खलु राक्षसी च॥ अंशोदिनस्य नृपती
न्प्रथमे निहंति मध्ये द्विजानपि विशोपरके च भ्रस्तन्॥ २॥ प्रस्तं निशा प्रहर

८२

केषु पिशाचकारी न्नक्रं चरानपि नटान्पशुपालकाश्च॥ स्वर्णोदये मकरलिंगिजु
नं च सोम्य याम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तं॥३॥ षडशीत्याननं चाप ९ न्नयुग्मे ३ मा
६ झषे भवेत्॥ तुलौ ७ जौ १ विषुवं विष्णुपदं सिंह ५ ह्यालि ८ गो २ घटे ११॥४॥ संक्रां
ति कालादुभयत्र नाडिकाः पुण्यमताः षोडश षोडश भागेः॥ निशीथतो वी
ग परत्र संक्रमे पूर्वपरार्द्धतिमिर्भागयोः॥५॥ रात्रौ निशीथे यदि संक्रम
स्यादिनद्वयं पुण्यमयोदयास्तात्॥ पूर्वपरस्यां ह्यर्धरात्रियाम्यसौम्यायने दिने
पूर्वपरे तु पुण्ये॥६॥ संध्यात्रिनाडी प्रमितार्कबिंबादर्द्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र॥
चेयाम्यसौम्ये ? यने क्रमात्स्तः पुण्यौ तदानीपरपूर्वघस्रौ॥७॥ याम्यायने वि
ष्णुपदे चाद्या मध्याह्नतुलाजयोः॥ षडशीत्यानने सौम्ये परा नाड्यः ति पुण्यदाः॥

ज्योविः
२६

| रवौ | चंद्रे | भौमे | बुधे | गुरौ | शुक्रे | शनौ | दिन | दिनम | दिन | सूर्या | रात्रि | रात्रि | रात्रि | रात्रि | सूर्योदय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| उग्रने | लघु | चरने | मैत्र | स्थिर | मिश्र | दारुण | प्रथम | मध्यम | तृतीय | दिनचतुर्थे | प्रथमप्रहर | द्वितीय | तृतीय | चतुर्थ | संध्यासित्र |
| घोरा | ध्वांक्षी | महोदरी | मंदाकि | मंदाकि | मिश्रा | राक्षसी | अंस | संध्या | संध्या | संध्या | | १हदे | प्रहरे | प्रहरे | मुखान्दे |
| अधश्रोत्र | वैरूपा | चोरान्नी | नृपान्नुरत | द्विजा | पशून् | चांडाल | नृपान्हृति | द्विजान्हृति | वैश्यपा. | ब्रह्मान्हृति | पिशाचान् | नक्तंचरा | नरान्हृ | पशुमा | त्रिः। |

८ नयायनाशाः रवरशारतान्वसमशार्कंगत्यादिव्हलादिनाधेः॥ मेषादिनः प्राकच
नसंक्रमाः स्पुदीनेजपादौवरूपुण्यदास्ते॥ २॥ समंमदुहिप्रवसुश्रवोश्विमघात्रि

फवीस्त्रप भं वृह्स्पात॥ अ.वह्निर्देवादितिजं जघन्यं सार्पविषुपाग्नीनिलशाक्रयाम्यं ॥१०॥ जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः शरेन्दवो बाणकृता बृहत्सु। रवं गमसंख्या सम भेमहर्घता समर्घ सार्म्य विधरुद्रप्रीनेपि॥११॥ अर्कादिवारे संक्रांतो कर्कस्याद्विशोपकाः॥ द्विशो १० नवो २० ग जा ८ सूर्या १२ सत्यौष्टी ११ दशशायकाः॥ ५॥१२॥ स्याच्चैतिले नागचतुष्पदे रविः सप्तोनिविष्टस्तु गराद्विपंचके॥ किंस्तुघ्नकर्चैः शकुनौ मकौलवेनेष्टः समः श्रेष्ठइहार्घवर्षणे॥१३॥ सिंह१ व्याघ्र२ वराह३ बास भ४ गजा५ वाहादिष६ घोटकाः७ श्वा८ जांगो९ खरणा युचक्र वर्ततो वाहा रवेः संक्रमे॥ वस्त्रं श्वेत१ सुपीत२ हारितक३ पांडू४ रक्त५ काला६ सितं७ चित्रं८ कंबल८ दिग्घनाभ९ मथ शस्त्रं स्याद्भुसुंडी१ गदा२॥१४॥ रवेर्का

शिवः

७

| समभानि | बृहज्जानि | जघन्या | सुप्तः | निविष्ठः | ऊर्ध्वः॥ |
|---|---|---|---|---|---|
| भ.।रे.चि. | उ.फा.उ. | ७अश्ले. | तैति | गिर. | किंस्तु |
| ७अनु.ज्ये | षा.उ.भा | श.७भ | लेना | वृत्ति | घ:श |
| ७अस्य.पुष्य | रो.विशा | द्री स्वा. | गेच | जान | कुनः |
| ७अति.ध. | खा पुन | ज्ये. नक्ष | तुष्प | द्राव | कौल |
| श्र.कृत्ति | र्वसु संक्र | संक्रम | दे र | बवाल | व:स्त्री |
| .मघा.पू. | मतो मु | तो मुहू | विनै | वसम | वव |
| संक्रमतो मु | हूर्ताः | र्ता:१५ | र्ऋ:॥ | :॥ | तोऽर्ध्वः |
| हूर्ता ३०सा | ४५ साम | फलं महर्घता | | | |

१ दं २ ४ श्रा रा स ५ तोमर ६ मयो कुं
तस्त्र ७ पार्श्वे कु.प्रो ८ स्त्र १० वाण
११ स्त्वपन स्तम्भन १ परमान २ से
स ३ प क्षां नकं ४ क्षुपं ५ ६ पपि ६
।चित्रैतान ७ गुड ८ मध्वा ९ जं १०
तथा कर्कि ११ ऽयोले यो १ मग
नानि १० कुंकुम २ मपोपारीर मत
रोचनं ७॥१५॥ या वर्षोनुमदो १ निशो जन २ मणो का।नागरुश्चेद्र को ११ जाति
दैवत १ नक्षत्र २ सर्या २ विहगा: ४ पश्च ५ णा ६ विप्रास्तत:॥ छत्रा ८ वैश्पक ९

| ॥बव॥ | बालव | कौलव | तैतल | गिर | वणिज | भद्रा | शकुन | चतुष्प | नाग | किंस्तु | ॥करणानि॥ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | व्याघ्र | वराह | गर्दभ | गज | महिष | अश्व | स्वान | मेष | गौः | कुकुट | ॥वाहनः॥ |
| श्वेतव | सुपीत | हरित | पीत | रक्त | श्याम | असित | चित्र | केव | दिव्य | घना | भाव स्त्राणि |
| भुशुंडी | गदा | खड्ग | दंड | धनुः | तोमर | वज्र | पाश | अंकुश | अस्त्र | बाण | शस्त्राणि |
| अन्नेनन | परमां | भिक्षा | पक्वांन | दुग्धः | दधि | चित्रान्न | गुड | मधु | घृत | शर्करा | भक्ष्याणि॥ |
| कस्तुरी | कुंकुम | चंदन | मृत्ति | गोरो | अगार | चोवा | हरि | अंजन | अगरू | कर्पूर | ॥लेपनानि |
| देवत | भूत | सर्प | पक्षी | पशु | मृग | विप्र | क्षत्री | वैश्य | शूद्र | संकर | जातयः॥ |
| पुंनाग | जाति | वकुल | केतकी | बिल्व | अर्क | दूर्वा | कमल | मालिका | पाटल | जया | पुष्पाणि॥ |

शिवः
१८

५

मृदू१० शांकुरभवाः ११ पुष्पं च पुंनागकं १ जाती २ वाकुलं ३ केतकानि ४ च तथावि
ल्वार्क ५ दूर्वा ६ कुब्जं ७ नाग ८ ॥ स्यान्मल्लिका ९ पाटलिका १० जया च ११ संक्रांति
वस्त्राशनवाहनादेः ॥ नाशाश्च तद्धस्तपजीविनां च स्यात्तोपविष्टस्वपतां च नाश
: ॥ ७ ॥ संक्रांतिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिके ३ स्वनेनिरुग्गमनं ततोंगसे ६ मु
खं त्रिके पीडनमंक ८ नेत्रकं ३ त्रिके र्थहानी रससे ६ च नागमः ॥ १८ ॥ । न पेक्षणं सर्व
ल्लातिप्रसंगरणास्त्रविवाहोगमदीक्षणेरवेः ॥ वीर्यैप्यताराबलतः स्ततोविधु
र्विधोर्वलेऽर्कोःकेवलेकुजास्यः ॥ १९ ॥ स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीनउक्तो मासो ऽ
धिमासः क्षयमासकस्तु द्विसंक्रमस्तत्रविनागयोस्तास्तियोर्द्विमासोप्रथमांस्य
संज्ञो ॥ २० ॥ इति श्री देवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ सं

क्रांतिप्रकरणं तृतीयं॥ अथ गोचरप्रकरणं॥ सूर्ये रसां त्रेरव १० युगे ४ ग्नि ३ नंद

९ षि वा ११ स्त्र यो ५ जौ मणा नीत मश्व॥ रसां ६ कयौ ९ नी न १० षारे ५ गुणां ३ त्ये

१२ चंद्रे बग श्चौ ४ गुण ३ नंद ९ योश्व॥ १॥ नाना ११ श्रमे ८ चाध ५ षारे ५ रसां ६ त्ये

१२ नग ७ द्युयैं २ ज्ञोद्वि षारे ५ धि ७ रामे ३ रसां ६ क ९ यो नीग ८ विधौ ४ रव १० नागे

८ नान ११ व्यये १२ देवगुरुः षारा ५ श्चौ ४॥ २॥ ध्यं २ त्ये १२ न वा ९ ष्रो १० रि ७ गुणे ३

षिया ११ हौ ८ शुक्रः कु ९ नागे ८ द्वि २ नगे ७ ग्नि ३ स्त्ये ९ वेदां ४ वरे १० पंच ५ निधौ ९

ग जे ८ षौ ५ नंदे ९ षिवो ११ जी नु १२ रसे ६ षि वा ११ ग्नौ ३॥ ३॥ क्रमा कुजो वि

दुद्रातियह स्मात्स्वितुः सुतस्मात्र न वेधमाहुः॥ दुष्टोपि खेटो विपरीत वेधात्

शुभोद्विकोणे २। ९। ५ शुनरः स्मितेजः॥ ४॥ स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुर

षिवः

१९

37

न्मे यद्दा धिष्ठितराशितस्तु :॥ द्विमाद्रिविध्यांतरए वर्वेधोन सर्वदेशेष्विति का
रुपयोक्तिः॥ ५॥ जन्मर्क्षी निधनं ये हे जनिभतो धानः १ क्षतिः २ श्री ३ मैत्री ४ वि
ना ५ सौख्य ६ कलत्र ७ दौष्यम ८ नयः ८ सुमीन नाशः ९ सुखं ॥ १० ॥ नो नो ११
पापै रुति क्रमात्तदस्तु नंध्वस्ते जयस्वलीना दानं शांतिकं रयो यदं लग्नं नदं नो
वी ह्य माकुः परे ॥ ६ ॥ पापांतः पापयुग्मध्य ७ पापार्चंद्रः मृ नो पसनृ ॥ मृ नां शे
चाधिम्र त्वांशेगुरुदृष्टोऽस्तु नोपिसन् ॥ ७ ॥ सिता सितादौ च दुष्टे चंद्रे पक्षेऽस्तु मा
तुनो ॥ अत्रामे चास्तु नो प्रोक्तौ संकटे अवलंबितं ॥ ८ ॥ वज्रं स्तु के ते सुम्रको
प्रवालं नौमे गोमेदमार्को सुनीलं
॥ के तौ वैदुर्य गुरौ पुष्पकं ह्नेपाचि:

| ईशान बुधपाचिः | पूर्वस्तु कहीरी | आग्नेय चेद्रमुक्ता |
|---|---|---|
| उत्तर गुरु पुष्पक | मध्ये सूर्य माणि | याम्य भौम प्रवालं |
| वायव्ये केतु वैडु | पश्चिम शनि नी | नैऋत्य राहु गोमेदं |

स्रा ग्माणिक्य मर्कैतु मय्यो॥ ९॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनी
लं॥ गोमेदवैदूर्यकमर्कतः स्यूरत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णं॥ २०॥ गार्यंनाजावर्नेर्कं
राद्रु केनौ रौ वांग्र कें न्द्वो ग्नमुक्ता गुरोस्तु॥ लोहं मंदस्यारनान्वोत्रवालं ताराज
न्मर्क्षात्त्रिरावृत्तिनस्यात्ता॥ २१॥ जन्मा रव्य १ संपत् २ द्विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ सा
धकाः वध ७ मैत्राति ८ मैत्रसु ९ तारानामसदृक्फलाः॥ २२॥ मत्स्योऽस्त्वणीति
लान्विपद्यति गुडं पण्कं त्रिजन्मस्वथो द्युत्प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वैर्वि
पत्प्रत्यरि॥ ५ सु श्वाद्विमपर्यये स्युर्न दोषा येषां द्वितीये शकाना दिग्रंशः ४ तृ
तीयका २ प्रथमस्तु नाः सर्वे ति तीये समताः॥ २३॥ षष्ट्यंगतनं तु तत् घटीयु
तं युगाहतं॥ शराब्धि ४ हृतं लब्धतोर्कं १ २ शोषे १ वस्याः क्रियाविधोः॥ २४॥

शिव: २०

ज्व

प्रवासनाशो मरणं जयश्च द्वास्यारति ६ कीर्ति ७ सप्तनुक्ताः ॥ ८ ॥ ज्वराख्य १० क
म्प ११ स्थिरता १२ त्र्यवस्था मेषात्क्रमात् मासदकफलास्तु ॥ १५ ॥ लाजा कुष्ट
वला प्रियंगु हानसिद्धार्थैर्निशादारुनिः पुरवालो भ्रमुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं
ग्रहो २ स्याद्घहन्न ॥ धेनुः १ वरुणो वृषश्च २ कनकं ४ पीतांबरं ५ घोटकः श्वेतो ६
गौर ३ सिता ७ महासिजल ८ ३ नार वेदूक्षिणाः ॥ १६ ॥ सूर्यारसौम्या स्फुजि
तो ५ क्षेत्राग्रा ८ समा ७ द्रि ७ घस्त्रा निवि करग्नि ३ नाडी ॥ तमाय मे ज्या त्रि ३ रसा
६ ब्धि २ मासानां तवराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १७ ॥ दुष्टेयोगे हेम चंद्रे च शंखं
धान्यं तिष्यर्क्षे तिथौ तंदुलाश्च ॥ वारे रत्नं भे च गां हेम नाडुपादद्यात् त्रिपथ्ये च
तारा सुराजा ॥ १८ ॥ राहुणा दिग्गौर विकु नौफलदौ मिते ज्यो मध्ये क्ष दाशानि सु

तच्चरमेऽप्यमंदो॥ अथ चांद्र १ न २ वह्नि ३ भय २ सन्मति ४ स्त्र ५ सौख्य ६ दुःखानि ७ मासि
जनिजेरविवासरादौ॥ २८॥ इति श्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्त
चिंतामणौ गोचरप्रकरणं चतुर्थं॥ अथ संस्कारप्रकरणं॥ आद्यं रजः शु नैमो
घे मार्गशीर्षे च फाल्गुने॥ ज्येष्ठश्रावणयोश्रेष्ठे सदारे सन्नो दिवा॥ १॥ श्रुति
त्रय मृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सितांवरे॥ मध्येच मूलादितिभपित्र्यमिश्रेपरेष्वस
त्॥ २॥ नप्तानिं [illegible] संक्रमे दर्शरिक्तामंध्या षष्ठी ६ द्वादशी॥ १२ वैधृतेषु॥ रोगे
ष्टम्यांचंद्रसूर्योपरागे पातचार्धनोरजोदर्शनं सत्॥ ३॥ अथ रजोदर्शनस्ना
नं॥ हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शाक्रान्वितैश्च तिथौ च नवाम
रेच॥ स्नायाद्यथा न्नेववती मृगपोष्णवायुहस्ताश्विधातृभिरलं जनतेच

शि व:
२९

गर्भे॥ ४॥ अथ गर्भाधानं॥ गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनप्रत्यग्जन्मर्क्षं च मूलांतकं
दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिं॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च प
रिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभं॥ ५॥
भद्रां षष्ठीपर्वरिक्ताश्च संध्या भौमार्कीकीनाद्यरात्रीश्चतस्रः॥ गर्भाधानं त्र्युत्त
रेंद्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपे सत्॥ ६॥ केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापै
स्त्र्यायारिगैः पुंग्रहलग्नदृष्टे॥ ओजांशगेऽब्जेऽपि युग्मरात्रौ चित्रादितीज्या

सीमंत

श्विषु मध्यमं तत्॥ ७॥ अथ पुंसवनविष्णुपूजा॥ जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋ
तिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः रिक्तामार्करसाष्ट ४।९।१४।३०।१२।६।८ वर्ज्यतिथि
सिमीसाधिपे पीवरे॥ सीमंतोऽष्टमषष्ठमासि गुरुदैः केंद्रत्रिकोणेख

सौम्ये नाडी त्रिपुवा ध्रुवा स दृढे लग्ने च पुंसां शुभे ॥ ८ ॥ मासेश्वराः सितः १ कुजे २ ऽथ गुरू ३ रवी ४ नु ५ सौरि ६ चंद्रा ७ ऽब्जजा ८ स्तनुप ९ चन्द्र १० दिवाकराः स्युः ॥ स्त्रीणां विधोर्बलमपुंशं तिविवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसु सत्तनुरिवा ॥ ९ ॥ एवं विदितेः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा ॥ मासेऽष्टमे विष्णुविधातृजीवे लग्ने शुभे सुग्रहे च शुभे ॥ १० ॥ अथ जातकर्मनामकर्ममुहूर्त ॥ तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ॥ एकादशे द्वादशके पि घस्त्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरे दुसुस्यात् ॥ ११ ॥ अथ प्रसूतीस्नानं ॥ पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्र नरवीज्यकुजेषु शस्तं ॥ नार्द्रात्रयं श्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसु ८ षट् ६ रवि २

शिवः
२२

३२

रिक्ततिथ्यां॥१२॥ अथ प्रथमादिमासे दंतजननफलं॥ मासे चेत्प्रथमे जन्तेत्स
द्दशनो: बाले विनश्यत्यवश्यं द्वितीयात्स क्रमशो नुजात भगिनी मात्र अग्रजान्यादि
घु॥ षष्ठे दौल मते द्विनाग मनुजं तातात्सुखं पुष्टतां लक्ष्मी सौख्य मथोजनो
सद्यानन्द्धा स्वपित्रादिहा॥१३॥ अथ दंतानां निष्क्रमणं॥ दोलारोहो कैना
त्यं च पूर्वपं चेषु सप्तमैः नैऋत्यं भरणं कार्यं याचि सौख्यं क्रमाच्छिशोः॥
१४॥ दंता कै १२ मप १९ घृति अदि गिमि ७० तवा सरेख्या द्वारेभ्यु नेमद् दुलघु
ध्रुव मैत्रपौष्णान्वां॥ दोलाधिरोहणं याने निष्क्रमणं चतुर्थं मासे गमो क्रमसमये
कै १२ मितो निवामस तः॥१५॥ अथ जलपूजा॥ कवीज्याह्ल चैत्राधिमासेन पौ
षे जलं पूजयेत्सूतिका मासपूर्वौ॥ बुधेन्दुज्य वारे विरिक्ते तिथौ दि

न्मा

श्रुती न्मारि तिती न्दर्के नैऋत्यमैत्रे ॥ ७६ ॥ अथान्नप्राशनं ॥ रिक्ता ४।८।१४ नंदा ७।
६।११ षष्ठ ८ द्वर्श ३० हरिदिवस २२ मथो सौरि भौमार्कि वारे लग्नं जन्मर्क्षलग्ना
ष्टमगं दून वृगं मीनमेषालिगं च ॥ द्वित्वा घष्टा त्तमेमास्यथ दिनगे द्वष्टगं पं
च मादौ युग्ममासे नक्षत्रैः स्थाप्तिस्थिरा स्थैः समृदु लघुचरै बीलकान्नाप्रशनं
सत् ॥ ७७ ॥ केंद्रायकोण सद्भेज्ञगुरुभृगु नैःरव ७ शुद्धे ॥ लग्ने नैत्रिलाना नरियुगे
श्रवर्देतिपापैः ॥ लग्नाष्ट ८ षष्ठ १२ रहितं प्राशितं प्रशस्तं मैत्रांबुपाति सजनु
र्भमसद्ध्वके चित ॥ ७८ ॥ ~~हीणोन्नुरु~~ पूर्णचंद्रे स्पन्न नौमाकी विज्ञा गी वैः त्रिको
णाव्ययकें द्राष्ट स्थितैरुक्तं फलं नयदेत ॥ ७९ ॥ ~~क्षीणेंदुम~~ म निज्ञासीय
जरुदीर्घजीवी ज्ञानी च पित्तरुक ॥ कुष्टीवान न्केप्रवा तव्याधिमा न्भोगमा

शिव:
२२

45

गिनी॥ २०॥ अथ वधूप्रवेशनं॥ पृथ्वीवराहमतिप्रकुने विश्रुद्धे॥ रिक्तेतिथौ त्र
जतिपंचममासि वा तं॥ वध्वाश्च नो निमन्त्रमयप्रवेंदु सेषु हृष्टी मैत्र लघुनैरूप

| सौम्य चं. | पूर्णचंद्र | बृहस्पति | बुध | भौम | सूर्य | शनि | शुक्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भिक्षार्थी | यशःकुल | दीर्घजीवी | ज्ञानी | पितृरुक | कुष्ठी | अन्नरहित | भोगी |
| ९।५।१२ ११५।७१ १०१८ | ९।५।१ १२।१।४ ११।०।८ | ९।५ १२।१।४ ११।०।८ | ९।५ १२।१।५ ७।१।०।८ | ९।५।७।२ [illegible] १०१८ | ९।५।७।२ ११।५ १०१८ | ९।५।७।३ ११।५ १०१८ | ९।५ [illegible] |

वेशयेत्कौ॥ २१॥ तस्मिन्का
लेस्थापयतन्मुरस्ताच्छस्त्र
शस्त्रपुस्तकं लेखनीचास्व
र्णेगैर्यपयद्युक्तातिबाल
स्ते राज्ञी वेतस्य वृत्तिः प्रति
शा॥ २२॥ अथ तांबूलभक्ष
णं॥ वारे भौमार्किहीने क्रवमृदुलघुनैर्विष्णुमूलादितीज्यस्वातीवस्वंबुपेतै

मिथुनमृगवधकुंभांगे मीनलग्ने॥ सौम्यैः केंद्रत्रिकोणे रंध्रनगगनगैः शत्रुला
भत्रिसंस्थैर्लग्नं बृहत्सार्द्धमासद्वमितसमयेप्रोक्तमन्नाशनं वा॥२३॥ अथ कर्ण
वेधः॥ रिक्तांत्यक्त्वातांश्चैत्रपौषौ च हरिशयने जन्ममासं च रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारा
मृ नु ६ मुनि ७ वसुमितैः ८ः संमिते मास्यथो वा॥ जन्माहात्सूर्य १२ नृपैः १६ परि
मितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे ऽथौजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवे
धः प्रशस्तः॥२४॥ संभुक्तैर्मृत्तिभवने त्रिकोणकेंद्रैः त्र्यायस्थैः शत्रुत्र्यायस्वच
रैः कवीज्ये लग्ने॥ पापारव्येरारिसहजायगैर्हसंस्थे लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभा
वाहः स्यात्॥२५॥ अथ चौलं॥ गीर्वाणांबुप्रतिष्ठापरिणयनदहनाधाननगे
हप्रवेशाच्चौलं राजाभिषेकोव्रतमपि च शुभं नैव याम्यायने स्यात्॥ नो वा

शिव:
२५

47

बाल्यस्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात्पक्षे बार्द्धे १ चक्रे विक्रान्तदृति
तमपरे यावदृीक्षां तदृग्रे ॥२६॥ पुरः पश्चाद्भृगोर्वाल्यात्र्यहं दश १० ई वार्द्धकं ॥
पक्षं पंच ५ दिनं तद्वद्गुरोः पक्षमुदाहृतं ॥२७॥ तद्वच्चाहं द्वयोः प्रोक्ते केचित्सप्त
दिनं परे ॥ अर्हं त्वात्यो विकेप्पन्येवद्दीर्द्य वत्र्यहं द्वियोः ॥२८॥ चूडावर्षी त्तती
यात्र भवति विषमे शार्करिक्ताद्यषष्ठी पर्वानादे विचैत्रोदगयनसमयेज्ज्वेंदु
शुक्रे ज्यकानां ॥ वारे लग्नांशयोश्चास्व जननिधनतनौ नैधुने शुद्धियुक्ते शाक्रो
पेतैर्विमैत्रैः ... दुचरलघुमैराय षट्त्रिस्थपापैः ॥२९॥ क्षीणचंद्रकुजसौरि
भास्करैः ... सुरस्त्रम तिपंगुतोज्वरः ॥ स्युः क्रमेण बुधजीवभार्गवैः केन्द्र
गैश्च शुभमिश्रतारया ॥३०॥ पंचमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ॥

पंचवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्या मृतिमान्नरि ॥२१॥ ताराद्दोष्टे त्रिकोणे ध्रुवे वा
क्षौरं स्यात्सौम्यामित्रस्य च जे । सौम्ये ते जे सोजने दुष्टतारा पूषा स्याद्वेया
क्षौरयात्रादिकृत्ये ॥२२॥ ऋतुमत्याः सूतिकायाः सुनोऽब्जोत्तादि नान्वरे

| क्षीणचंद्र | कुज | शनि | सूर्य | केद्रगे स्वामि |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| मृत्यु | अस्त्रमृतिः | पंगुता | ज्वरा | एतत्फलं ॥ |

ता ॥ मेषापत्स्यसन जैहेकैस्थिन्मार्गो
पि नेष्यते ॥२३॥ दंतक्षौरं नखकृत्यात्र
विहिता चौलोदिते वारमेयात्तदन्वार
रवीन्विहाय नवमं घस्रं च संध्यां तथा ॥ रिक्तां पर्वनिषुणं निशापानरणग्राम
प्रयाणोद्यत स्नाता नक्तकृताशने: नो हि पुनः कार्यो हितं प्रेमुनिः ॥२४॥
पार्ताः ॥ हितं क्षौरं जे श्मश्रुकर्म दिने पंचमे पंचमस्योदये वा ॥ षडग्नि त्रि

शिव: २५

मे

मैत्रोऽर्कः पुंचपित्र्योत्तरो ध्रुवश्चार्यमाक्षौरकर्मतु मेति ॥२५॥ क्षुतुपाणि पीडा
म तिबंध मोक्षणेक्षौर कर्मचाद्दि जनन पा ज्ञयाचरेत् ॥ शव वोदतीर्थगम
सिन्धुमज्जनक्षौर नाचरेन्न खलु गर्भिणीपतिः ॥२६॥ अथाक्षरारंभः ॥
गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पंचमाब्दके तिथौ शिवा११र्क१२दि१०ग्द्वि२
षट्६शर५त्रिके३ रवावुदक् ॥ लघुश्रवोनिलांत्यभादितीशतक्षमित्रभे च
रेनमन्नवेशि लिरिष्यते सतां दिने ॥२७॥ अथविद्यारंभः ॥ मृगात्कराच्छ्रु
तेस्त्रये ३श्विमूल पूर्विकात्रये ३ गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्६शर५
रेषुत्रिके ३ शिवा११र्क१२दि१०ग्द्वि२के तिथौ ध्रुवांत्यमित्रभे परैः शुभैर
धीरुत्तमात्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥२८॥ अथव्रतबंधः ॥ विप्राणांव्र

व्रतबंधनंनिगदितंगर्भाज्जनेर्वाष्टमेवर्षेवाप्यथपंचमेक्षितिभुजांषष्ठेतथैका
दशे॥ वैश्यानांपुनरष्टमेप्यथपुनःस्याद्द्वादशेवत्सरेकालेथद्विगुणेगतेनि
गदितंगौणंतदाहुर्बुधाः॥३९॥ क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रे
र्कविद्गुरुसितेंदुदिनेव्रतंसत्॥ द्वि२त्री३षु५रुद्र११रवि१२दिक्१०प्रमितेति
थौचकृष्णादिमत्रिलवकेपिनचापराह्णे॥४०॥ कवीज्यचंद्रलग्नपा
रिपौ६मृतौ८व्रतेधमाः॥ व्ययेब्जभार्गवौतथातनौ१मृतौ८सुते५
खलाः॥४१॥ व्रतबंधेष्ट८षट्६रिःफ१२वर्जिताःशोभनाःशुभाः॥ त्रि
षडायेखलाः पूर्णोवागो२कर्क४स्थोविधुस्तनौ॥४२॥ विप्राधीशौ
भार्गवेज्यौकुजार्कौराजन्यानामोषधीशोविशांच॥ शूद्राणांज्ञश्चांत्यजानांस

पिव:
२६

51

ज्ञानंलग्नानिः स्यात्कृष्णरवेषुः सुत्रीविश्रुक्रारसौम्याः॥४३॥ प्रारवेशावारतनुवीर्य
मतीवशास्त्रंपूर्णरवेशास्मर्यवेगाति जीवबलेत्रतंसहः॥ जीवेस्मगौरिपुगृहे विजितेच
नीचेस्यात्कृष्णस्त्रविधिनारहितोव्रतेन॥४४॥ जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रतेवि
द्याधिकोव्रती॥ आद्यगर्भेपि विप्राणां सत्रादीनांत्रनादिमे॥४५॥ स्वधिस्व
नेस्वमैत्रे वा स्वांशेवर्गोत्तमेगुरुः॥ रिप्फा१२ष्ट८तुर्य४गोपि श्रेणीचारिस्थः
शुभोप्यसत्॥४६॥ बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः॥५।९।११।२।
।७। श्रेष्ठोगुरुः खष१० षट्६ त्र्या३ द्ये१ ५ जया नत्र निंदितः॥४७॥ कुस्मीप
दोषेनध्यायेपूर्णौ निष्पपराक्के॥ प्राक्संध्यागर्जितेनेष्टोव्रतबंधोगल
ग्रहे॥४८॥ क्रूरोजडोभवेत्पापी पटुः षट्कर्मकृद्द्विजः॥ यज्ञार्थभाक्तथा

मूर्त्तौ रव्याद्यंशेतनौ क्रमात् ॥४९॥ विद्यानिरतः शुभराशिलग्ने पापांशगते हृद
रिद्धतारः ॥ चंद्रे खलुवेव दुःदुःखयुतः कर्णादिनि मे धनवान्स्वलग्ने ॥५०॥ रा
जसेवी वृषपवृत्तिः शास्त्रवृत्तिस्वपुत्रकः ॥ प्राज्ञोऽर्थवान्नलिक्षमेवी केंद्रे स्थी
दिखेचरैः ॥५१॥ शुक्रे जीवे तथा चंद्रे सूर्ये नो मार्कि संयुते ॥ निर्गुणः क्रूरदे
त्यः स्यान्निर्घृणः सद्युतेपुरुः ॥५२॥ विधौ सितांसगे सितेत्रिकोणगे गुरौ
तनौ ॥ स मस्तवेदविद्वतीयमांसगे तिनिर्घृण ॥५३॥ शुचिशुक्रयोषतय
सांघ्रि१०॥ स्वि२५ द्रा११ के१२ संख्यासिततिथयः ॥ मृता१४ ह्रित्रितयाष्टमी
टसं क्रमणं चग्रतेष्ठनधायाः ॥५४॥ चर्कि१२ तर्के६ त्रि३ नियी घुष्टदोषः स्या
त्तदयमेः ॥ गर्द्धमार्द्धप्रहरयाममयोस्यितेः क्रमात् ॥५५॥ प्राग्यसोरनया
त्र

शिव:
३

53

काम्बूतेवंधानांतरं यदिचेत्॥ उत्पातानध्ययनोत्पन्नावपिचशांतिपूर्वकं
न त्याज्या॥ ५६॥ वेदक्रमात् शाखिणोपिवादिकरत्रिमन्नलफवीसुपोष्यकरमै
त्रमैमगादितीज्ये॥ क्रवेधुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशाकृणेमगांत्यलघुमैत्र
~~[illegible]~~य नादितौसत्॥ ५७॥ नांदीश्राद्धोत्तरं मातुःपुष्पेलग्नांतरं न
हि॥ शांत्याचौलंव्रतंपाणिग्रहःकार्योऽन्यथानसत्॥ ५८॥ इति व्रतबंधः
॥ अथ छुरिकाबंधनंसमावर्तनकेशांताः॥ विचैत्रव्रतमासाद्यावर्जो
मास्तेविजेसितेज्ञा॥ छुरिकाबंधनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः॥ ५९॥ केशांते
षोडशेवर्षे चौलोक्तेदिवसेशुभे॥ व्रतोक्तदिवसादौहि समावर्तन
मिष्यते॥ ६०॥ इति श्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिन्ता

मरणे संस्कारप्रकरणं ॥ अथ विवाहप्रकरणं ॥ भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयु
क्ता शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः ॥ तस्माद्विवाहसमयः परिचिंत्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥ १ ॥ आदौ संपूज्य रत्नादि निरयग
णकं वेद्ये स्वस्य चिन्तकन्योद्वाहे दि १० गी पू॰ ११ न ल ३ रु य ७ विशेषः ॥
प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुला ७ कर्क
हरवंवाऽस्या प्रश्नस्य लग्नं शुभनरवचरयुतालोकितं तद्वद्स्यात् ॥ २ ॥
विषमभेंशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः रचयतो व
रलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ३ ॥ षष्ठाष्टमस्थः प्रश्न
लग्नाद्यदीन्दुः लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात् ॥ मृत्युश्चेन्दुः सप्तमे तस्य नो

शिवः
२८

55

मीरंडा स्पाद्द्भसंवत्सरेण॥४॥प्रश्नमतनोर्यदि पापनभोग: पंचमगोरिपुरुद्ध
शरीर:॥नीचगतश्चतदारवलुकन्या साकुलटा खथवाब्धलवत्सा॥५॥यदि
नवतिासि नातिरिक्त पक्षेत तुण्ठतः समराश्चिगः शशांकः॥श्रश्चनखच
रवीक्षितो ऽरिष्टं ध्रुवं भवति विवाद्विनाप्राकारक्रोया।६॥जन्मोष्मचवि
लोक्य बालविधवा योगं विधाप्यञ्जतं मावित्राङतपेषलं हि सुतयादृशा
दिर्मा वारद्ध:॥सलग्ने ऽच्युतमर्ति पिप्पलघटे: कुलाविवाहस्फुटं दृशा
नांचिरजीविने ऽत्रनभवेद्दोष: पुनर्भवः॥७॥प्रश्नलग्ने क्षणपादृशा
यस्य शुक्रस्वेच्छयाकामिनी तत्र चेदाव्रजेत॥कन्याका वासुतो वातदार्पदु
तैस्तादृशणपस्य मस्पाविनिर्दिपतेः॥८॥शंखचोरीविपचीरवेमंगलं

आयते वैपरीसंत दालक्षयेत्॥ वायमोवा रवर प्राग्वाप्यगाजोऽपिवाग्रम त्त
ग्नलक्षणे रौति नाद्यंयद्दि॥९॥ विम्बस्वाती चैम्म वपखी त्रयमेचेवस्वाग्ने यैर्वि
करपीडोचित कल्लैः॥ वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः संतोष्यादौ स्या
दनुकन्यावराणं द्दि॥१०॥ यरागि देवोऽथवाकन्यकासोदरः श्रजद्दिनेगी
तवाद्यादिभिः संयुतः वर वृत्तिवस्त्रयज्ञोपवीतादिना फ्रवयुतैर्वीक्षिपवीत्र
येराचरेत्॥११॥ गुरुप्शुद्धिवप्रोनकन्यकानांसमव र्षेषुषडब्दकोपरिशात्
॥रविप्शुद्धवष्या लुभो वराणामुभयोश्चंद्रविप्शुद्धितो विवाहः॥१२॥ मिथु
न१कुंभ११मगा१०॥ लि८वृषा२ज१गे मिथुनगेपिरवौ त्रिलवे ऽप्यचैः ग्र
लि८मगा१०ज१गतेकरपीडनं नवति कार्त्तिकपौषमधुष्वपि॥१३॥ स्या

शिव:
२९

57

यग्मे सुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासनतिथौ करग्रहः॥ नोचितोऽपि विबुधैः प्रशा
स्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः॥१४॥ ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चे
न्नैव युक्तं कदापि॥ केचित्सूर्ये वह्निगं प्रोत्स्य वादुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्या
द्विवाहः॥१५॥ सुतपरिणयात्षण्मासांतः सुता करपीडनं न च निजकु
ले तद्वधा मंगलादपि मुंडनं॥ न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके न
सहजसुतोद्वाहो२ द्वाद्धृ ऋतुभेदेन पितृक्रिया॥१६॥ वध्वा वरस्यापि कुले त्रि

९

पूरुषे बंधूनां वृजे कश्चन निश्चयोऽत्तरा॥ मासोत्तरे तत्र विवाह इष्यते
षां स्याथवा सूतकनिर्गमे परैः॥१७॥ चूडा व्रतं चापि विवाहतो व्रतात् चू
डा च नेष्टा पुरुषात्रयांतरे॥ वधूप्रवेशाच्च सुतापि निर्गमः षण्मासतो

58

वाद्विनेदृनःशुभः॥१८॥ स्वप्न विनाशमादिजौ सुतसंविधनं कन्या सुतौ नि

कृति जौष्ट मुरैहतरकं॥ ज्येष्टा नजातं तनया स्वधवाग्रजं च वणक्रान्तिजा नव

ति देवरनाशकर्त्री॥१९॥ द्वीशाद्य न्पादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा॥ म्

लांत्यपाद सापीयपादजाते तयोः शुभो॥२०॥ वर्णे विष्यंत था तारा योनिश्च य

हमैत्रकं गणमैत्रं नकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः॥२१॥ द्विजाझषा १२

लि८ कर्कटा ४ स्ततो नृपाः विशो द्विजाः वरस्पवर्णी तोधिका वधू नैशुभाख्यते

| ब्राह्मण | क्षत्रि | वैश्य | शूद्र |
|---|---|---|---|
| मीन<br>वृश्चिक<br>कर्क | मेष<br>सिंह<br>धन | वृष<br>कन्या<br>मकर | मिथुन<br>तुला कुंभ |

बुधैः॥२२॥ द्विला मध्गौ ड्ं नरराशि वैश्यः

सर्वे ते थेषां जलजाश्च नक्षाः॥ सर्वेपि सिं

हस्य वश्ये विना लिंङ्ज्ञेयं नराणां व्यवहारतो

शिव
२०

॰म्पत॥२४॥ कन्यक्षी हरणेयावलक्ष्मा नेवरमायहि॥ गणायेंनवतिः शोषेत्री
अश्वपद्वि॰ नमसत्स्मृतं॥२५॥ ॰अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः
कासरः सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्तयोः कुंजरः॥ मेषो देवपु
रोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः स्याद्वह्नीन्द्रभयोस्तथैव नकुलश्चां
द्राब्जयोन्योरगः॥२५॥ ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा त

| आश्वि शतभि | स्वाति हस्त | धनि पू.भा | भर रेव | पुष्य कृ | श्रव पू.षा | उ.षा अभि | मृग रोहि | ज्येष्ठा अनु | मूल आर्द्रा | पुन आश्ले | मघा पू.फा | विशा चित्रा | उ.फा उ.भा | जाति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | महिष | सिंह | गज | मेष | वानर | नकुल | सर्प | हरिण | कुक्कुर | मार्जार | मूष | व्याघ्र | गो | योनयः |

था मार्जारो दितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः॥ व्याघ्रो द्वीशभचित्र

यौरपि-चगो बुधमर्थ मही हूयोर्नि: पारगयोपरस्परमहावैरं विवादे स्मृतं॥
२८॥ मित्राणि धुमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ सौम्यश्चास्य स
मो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत्॥ शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदः चं
द्रेज्य सूर्या बुधः शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशांकस्य नौ सितार्कस्य रौ॥२९

| सूर्य | चंद्र | भौमः | बुधः | गुरुः | शुक्र | शनिः | राहुः | केतुः | ग्रहः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगल गुरु चंद्र | बुध सूर्यः | सूर्य चंद्र गुरुः | सूर्य शुक्रः | सू· चंमं | बुध शनि | बुध शुक्रः | शुक्र शनि | सू·मं चंद्र | मित्राणि |
| बुध | मं·गु शु·श | श· शु· | मं·गु श | श | मं·गु | गुरुः | गुरु | बुध गुरु | समाः |
| शुक्र शनिः | शुक्र शनि | बुध | चंद्र | बुध शुक्र | सूर्य चंद्र | सू·चं मं | सू·चं मं। | शुक्र शनि | शत्रवः |

मित्रं चास्य रिपुः श
शीगुरु शनी स्मा ज्ञा।
समागीष्पतेर्मित्रा
ण्यर्क कुजेंदवो बुध
सितौ शत्रुः समः सू

शिवः
३१

यीज:॥ मित्रे मैत्र्यं प्रणीतौ कवेः शत्रुरिवी शत्रू कुजे ज्ञो समो मित्रे पुष्टेः ऽत्रक
बुधोऽस्य नेरविशशिक्ष्मा जाद्विषोऽन्यः समः॥२८॥ रक्षोनरामरगणाः क्र
मतो मघादि वह्निश्चिदरम्लवरुणानलतक्षराधा। पूर्वोत्तरात्रयविधातृय
मेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि॥२९॥ निजनिजगणमध्ये प्री
तिरत्युत्तमा स्यादमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा॥ असुरमनुजयो

| मघा | अश्ले | धनि | ज्येष्ठा | मूल | शत | कृ | चि | वि | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पू.फा | पू.षा | पू.भा | उ.फा | उ.षा | उ.भा | आर्द्रा | रोहि | भर | मनु |
| अश्व | मृग | रेव | हस्त | पुष्य | पुन | अनु | श्रव | स्वा | देव |

श्चैव मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र॥३०॥ मनुः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽप
रहानिर्निवासजो॥ द्विर्द्वादशेऽरनिःस्वत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्॥३१॥

विषमा लग्नका राशेः षष्ठंषष्ठाष्टकं नसनत्न समा स्वषष्ठं नं ज्ञेयं विपरीतं नशोभ नं॥२२॥ प्रोक्ते दुष्टनकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्येन नाथो सग्नीश्वर सौहृदेपि गादितो नाडपर्ह्लेर्शुद्धिर्यदि॥ ग्रमर्हेघापयोर्वै लिलसा विते नाडपर्हेश्चो तथा

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | गर्द्द | श्वा | उ | ए | ह्र | ये | ह | उ | अग्रनाडी | मं | सु | बु | चं | र | गु | शु | मं | बृ | श | श | बृ | अधिपा |
| ह | चि | ध | भ | म | ह | अ | पु | उभा | मध्यनाडी | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | राशय |
| मू | रो | स्वा | म | उश्ले | रे | अ | उ·पु | वि | अंत्यनाडी | मे | म | तु | क | मे | म | तु | कु | मे | म | तु | कर्क | नवांशा |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | बु | बृ | श | मं | त्रिं· | ज्ये | उ·मू | रेव· | अंत्यघ | क | हृ | मी | अंतेत्रि | ५ | १० | १५ | अंत्य | षडोंडांत |
| ५ | ७ | ८ | ५ | ५ | सम | २ | २ | २ | टिकांग | ३० | ३० | ३० | पतुगंडां | १ | १ | १ | आंत्य | शिव: |
| ५ | ५ | ८ | ७ | ५ | त्रिं | मू· | अ· | म· | आदिघ | सिं | म | मे | आदौत्र्यं | १ | ६ | ११ | आद्यं | २२ |
| मं | श | बृ | श | शु | वि· | २ | २ | २ | टिकांग अंत॥ | ३० | ३० | ३० | घटीगं ३ | १ | १ | १ | | |

ना

ताराशुद्धिवसेन राशिवशता नाडीनिरुक्ता बुधैः ॥२३॥ ज्येष्ठारौ दार्यमांभः पतिज
युगयुगं दास्रभं चैकनाडी पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रांतकवसुजलभं योनिबुध्न्याश्च मध्ये
॥ वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरस्यां दंपत्योरेकनाड्यां
परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः ॥२४॥ मैत्र्यां राशिस्वामिनो रंशपद्वं
स्याद्गणानां न दोषः ॥ खेटारित्वं नाशयेन्नाडिकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटं
॥२५॥ पौष्णेशाश्वात्काद्रसा ५ सूर्य १२ नंद ९ ष्वविद्धे मध्यापरभागयुक्ते ॥ जन्मे
प्रियः प्राग्युजि नो स्त्रियाः स्यान्मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रियास्त्री ॥२६॥ अकचट
तपयसवर्गाः खगेशमार्जारसिंहश्वनां ॥ सर्पाखुमृगावीनां निजपंचमवै
रिणां मध्ये ॥२७॥ राश्यैक्ये चेद्भिन्नमंशं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये चेद्राशियुग्मं तथैव ॥

श ना

नाडीदोषो गणानां च दोषो नक्षत्रैकपाद जे दोषं नसंस्थात॥ ३८॥ से व्याधमर्त्ययु
वतीन गराद्दिनं चेत्स्फं विहिन्नसाधनि मर्त्य पुराद्दिसज्ञास्यात॥ सेवाविनाप्र
चलनाशानन्तर्त्य नाग्राग्रामाद्दिसौख्यहृदिदं क्रमप्राः प्रदिष्टं॥ ३९॥ कुजश्रुक्रसौ
म्यशाणि सूर्यचंद्रजाः कविजौमजीवशनिसौरयोगुरुः॥ उद्दराशिपाः क्रियम
गास्यतो लिके न्तुनतोन वांशविधिरुच्यते बुधैः॥ ४०॥ समगृहमध्येशशि
रविहोरा॥ विषमे जमधे रविशशिनोश्चाः॥ ४१॥ शुक्रज्ञजीवशनिभूतन
यस्य बाणाः ५ शैलाः १ वसु ८ पंच ५ विशिखाः ५ समराशिमध्ये॥ त्रिंशांशको वि
षमजे विपरीतमस्य द्वेष्काणकाः प्रथमपंच ५ नव धिपानां॥ ४२॥ स्या
द्वादशांशशद्दराशित एव गेहं होरायह्ककचनवमांशकसूर्यमागाः॥ त्रिंश

जी

शिवः
२३

| | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | राशि स्वा· |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | मे १० | शु १० | बु १० | चं १० | र १० | बु १० | शु १० | मं १० | वृ १० | श १० | श १० | वृ १० | अंश स्वा· |
| | र २० | बु २० | शु २० | मं २० | वृ २० | श २० | श २० | वृ २० | मं २० | शु २० | बु २० | चं २० | अंश स्वा· |
| | वृ ३० | श ३० | श ३० | वृ ३० | मं ३० | शु ३० | बु ३० | चं ३० | र ३० | बु ३० | शु ३० | मं ३० | अंश स्वामि |

लग्नराशि

विषम राशि

| मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० | २ ३० |

एकाग्न षट्रिंशेकथिता स्तु वर्गा त्मोम्पिच्छुनं नवति-चाग्रुन्न मेवपापैः॥ ७३॥ ज्येष्ठापौ ष्ण नक्षत्राणां त्यघटिकायुग्मंच मूलाश्विनी पित्र्यादेघटिका द्वयं निगदितं तत्त त्स्य गंडांतकं॥ कर्क्यां तु जे ४। ८। १२ सांत तोईघटिकास्सिंहाश्विमेषादिगा॥ त्र्यंत्यं ते घटिकात्मकं त्वशुभदं नंदातिथेश्चादिगं॥ ७४॥ लग्नात्पापा च नचंद्रात्सूर्यात्सौम्य दानदा॥ कर्त्तरी नाम साज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा॥ ७५॥ चं

| अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | अ | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | ध | श | पू | उ | रे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५० | २४ | ३० | ४० | १४ | ३२ | ३० | २० | ३२ | ३० | २० | १८ | २२ | २० | १४ | २४ | १० | १४ | ५६ | २४ | २० | १० | २० | १८ | १६ | २४ | ३० |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |

शिवः

३४

रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं ध्रुवं ॥ सौख्यं माप्त्यवैराग्ये पापद्वययुते मतिः
॥ ४६॥ जन्मलग्नद्वयोर्मध्ये गुरा प्रोनेष्टः करग्रहः ॥ एकाधिपत्ये राशीशामैत्रे वा
नैव दोषकृत् ॥ ४७॥ मीनोक्षकर्कालिमृगास्त्रियोऽष्टमं लग्नं यदा नाष्टमगेह
दोषकृत् ॥ अन्योन्यमित्रत्ववमे न सावधूर्न वैन्मुता पुर्त्रन सौख्यनागिनी ॥
४८॥ मतिम्नवनां शोयद्विचविलग्नेतदधिपतिर्वा कन्नरूकरस्पातं ॥ व्ययन
वनं वा नवति तृदंशास्तदधिपतिर्वा निम्नभकुरस्पात् ॥ ४९॥ खरामनूं तोत्पादि
तिवाक्षिपित्रे चूखवेदतः केरदंतस्वभूर प्राप्ते ॥ खवाण ५० तोऽष्विपति नो
१८ यर्मावुपेकृते २० भंगात्वा द्रुमविघ्नजीवृने ॥ ५०॥ मनोद्विदेवा १४ निलन
सौम्यशाक्रजे कुपस्त तः २२ चौतकरो ऽष्टितो १६ जने ॥ युगाब्धितावुष्णमतो

यथाम्पनेरक्वंदतोमित्रनवासवश्रुतौ॥५१॥ मूलेंगबाणाः५द्विषनाडिकाः कृ
ता४वज्राग्निनेयोविषनाडिका क्रवा॥ निघ्ना सनोगेन खतर्कभाजिताः स्फुटा
स्युरेवं विषनाडिकास्तथा॥५२॥ गिरिशा१भुजगमित्राः२।३पित्र्य४वस्वं५बुद्
विश्व७निजिद्८त्य्चविधाता९पीन्द्र१०इंद्रानलौ११च॥ निर्ऋति१२रुक
नाप्यो१३पत्यमाप्यो नगाख्य१५क्रमतरदुमुहूर्ता वासरे बाणचंद्राः॥५३॥
शिवोजपादादशे स्युर्मैत्र्या२।३।४।५।६।७।८।९ब्रेदिति१०जीव११कौ॥ विश्व
के१२।१३लाघ्र१४मरुतो मुहूर्ता॥ निशि कीर्तिता॥५४॥ रवावर्यमा ब्रह्मर
क्षश्च सोमे कुजे वह्निपित्र्येबुधे चाभिजित्स्यात्॥ गुरौ तोयरक्षोभगौ ब्राह्म
पित्र्येशनावी ॥ सार्पी मुहूर्ता निषिद्धाः॥५५॥ निर्वेधैः शशिकरमूल

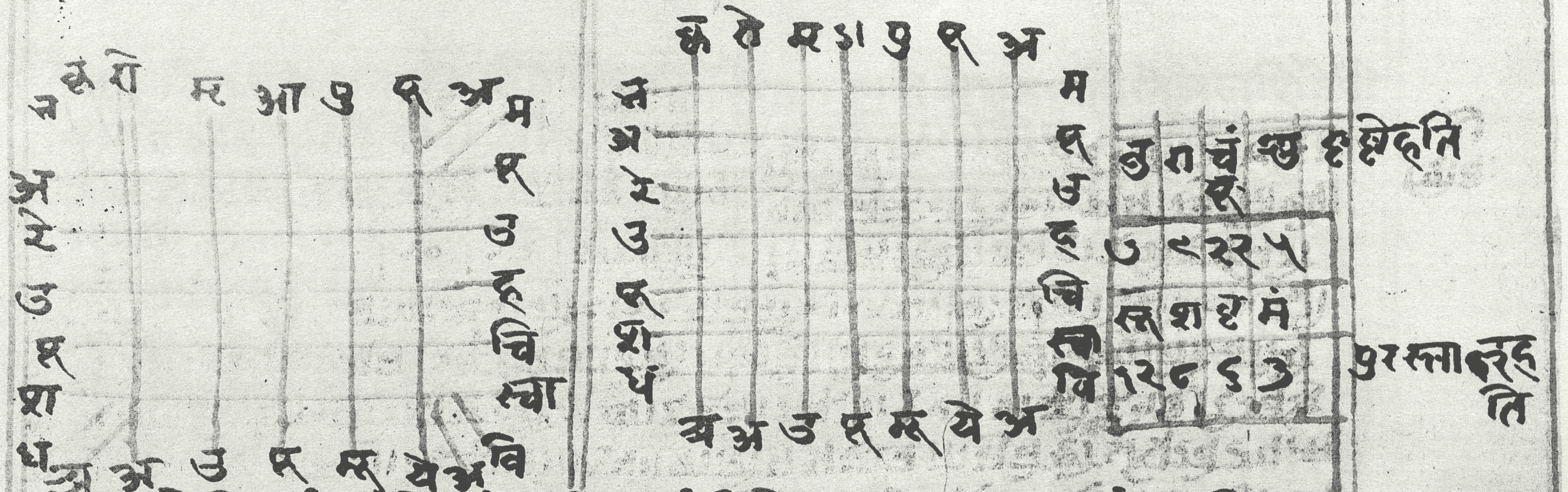
ज्योवः
३५

मैत्रपित्र्यब्राह्मसंन्योन्नरपवनैः मोविवादः॥ रिक्तामारहितातिथौ न्नोक्ति
वैश्वत्वांघ्रिश्रुतितिथिभागतो १ निजि त्स्मा न्। ५ ६॥ वेधोमोत्मम मोविरं
च्यनिज्ञितो य्यांम्यानुराधर्क्षयोर्विश्वेदोर्हरिपित्र्ययो ग्रहह्ल तो हस्तोन्त
राभाद्रयोः॥ स्वाती वारुणयो र्नैवेत्रि त्सतिभादित्योस्तयो फां स्पयोः रवे

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | दिनेषु तिथिदग्धमुहूर्ताः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | ६ १२ | ४ | ८ | ६ १२ | ९ ४ | १ २ | |

| मु॰ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिने | शिवः | सर्पाः | मित्र | पित्र्य | वसु | जलं | विश्वे | अभिजि | विधाता | इन्द्र | इन्द्राग्नी | रक्षः | वरुण | अर्यम | भगः |
| रात्रौ | शिवः | अजपात् | अहिर्बुध्न्य | पूषा | नासत्य | यमः | अग्निः | ब्रह्मा | चंद्र | अदिति | गुरु | विष्णु | रवि | त्वष्टृ | वायुः |

देतत्रगते तुरीयचरणघोषौ तृतीयद्वयोः ॥५७॥ पूर्णाके ज्येष्ठान भानि ले जलषि वेपो
स्मार्यमर्हे विसुक्षी पूर्वे वैष्णवसुधांशुने हय नगे सार्पी नुराधे मिथः ॥ दृक्तो पातिमन्ने
विधात्वविधि नेमहलानादिति त्वाष्ट्रनाजांघ्री याम्यमघेल्लष्णानुदृति भेवृद्धिलकु
नद्वेषिको ॥५८॥ नक्षत्राणि क्रूरविद्धानि क्रूरमुक्तादिकानि वा ॥ भुक्त्वा चन्द्रेण मु
क्तानि शुभानि नार्हाणि प्रचक्षते ॥५९॥ ज्वराद्रूपर्णे नु सिनास्वपृष्टे नेसप्तगो ॥१२
जाति २२ प्रारैर्म्मि दि ॥ संलतयैन्ते ऽके पानी ऽपचौमा सूर्यो २२ ष्ट तकौ ऽग्नि
३ मितंपुरस्तात् ॥६०॥ हर्षिणवैधृतिसाध्यव्यतीपातं गंडशूलयोगानां ॥ अंत्यसे
येन क्षत्रंपातेन निपातं नत ॥६१॥ पंचास्याजौ ५।१ गोमृगौ २।१० तौलिकुंभौ
७।११॥ कन्यामीनौ ६।१२ कर्कलीययुग्मे ४।८।९।३ तत्राद्योन्त्यं चंद्रभान्यो



चंद्रभान्वोनिरुक्तं क्रांतेरसाम्यं न यो भंमंडलेषु ॥ ९२ ॥ व्याघातगंडव्यतिपात
पूर्वैमूलान्त्यवज्रे परिघातिगंडे । एकार्गलाख्यो ह्यभिजिन्समेतो दोषः ॥

श्रीचेद्भूषमर्क्षगो ऽकी त्र॥ ६३॥ धारा ५ च्च ८ दिक् १० भा क ५४ नगा ७ तिथ्यस ५८ स्लि
पिद्भूतिभ्र ५५। १८ प्रकृतेभ्रपंच २१। २२। २३। २४। २५ तु पचग्रहाः सूर्यमतोऽकृता न
राश्यत्ता नदेशे कुरुवाल्लि काना॥ ६४॥ पातो प इत्यहन्न न्ता मुनेष्टो ऽष्टिरवेटपत्म
मः॥ वारस्त्रिधो ऽष्टमेस्तष्टः सैकस्याद्दृष्ट्यामक॥ ६५॥ धाकौर्के १२ दिग्वसु
१०।८ रसा ६ ध्य ४ श्विनः २ कुलिकारवेः॥ रात्रौ निरेकास्तिथ्यंशा धानो चास्त्र
पि निंदितः॥ ६६॥ चापांत्यगे गो ९।१२ घटगे ३।११ पतंगे कर्कीजगे ४।१ स्त्री
मिथुनस्थितेभ्र ६।३ सिंहालिगे ५।८ नक्रघटे १०।७ समास्युस्तिथ्यो दितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः २।४।६।

| २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | दग्धातिथि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मीन धन | कुंभ वृष | मेष कर्क | कन्या मिथुन | वृश्चिक सिंह | मकर तुल | २४ तु राशिषु रवौ मासि दग्धाः॥ |

शिवः ३७

गे

न॥१०॥१२॥ ६७॥ लग्नाच्चंद्रमदनभवनगे रवेर्वेटेनस्पादिद्दपरिणयनं॥ किंवावा
णाऽस्तगामितलवगेऽपयामित्रंस्यादसून्नकरमिदं॥ ६८॥ एकार्गलोपग्रहपा

| ० | १ | ४ | ६ | १० | ११ | १५ | १८ | १९ | २० | दशयो |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वात | मेघ | अग्नि | महीप | चोर | मरण | रुक् | बन्ध | वाद | क्षति | फलं॥ |

[illegible]

तलत्तायामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः॥ नपतंतिचंद्रार्के वलोपपन्ने लग्ने यथा
कान्सुदये नुदोषः॥ ६९॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाल्हिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितं
नं॥ सौराष्ट्रसाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ ७०॥ शशांकसू
र्येष्युतेने शोधे ख०न२ युगा४गा नि६ दशो१० पातिथ्यः१५ नागेंदवा१८

केंद्र८९मिता नरवा२०ष्मनवंति चैतेदश योगसंज्ञाः॥१७॥ वातः न्या१ग्नि४ महीप५ चौर१० मरणं१५ रुग्वज्र१८ वाद१९ क्षति२० योगां केंद्रलिते समेतनु१४युते योजितु सैको१द्धिता। नंदाप्ताद्यसंमिताखलु मनुमी१४ रेखाः क्रमात्संलिखेद्धीधोऽस्मिन्ग्रह चंद्रयो नंशुनदः स्पाद्दे कुरेखास्पयोः॥१८॥ लग्नेना उपयाततिष्योंक नष्टा८प्रोषे नाग८ब्रश्वि१३न केंद्रे नु१संख्ये रोगो वह्नि राज चौरोच्च मृत्यु बीणाश्चार्यदाक्षिणात्येप्रसिद्धः॥१९॥ रस६ गुण३ प्राप्ति१ नाग८ व्याघ्र आवश्य संक्रांति या तां शाकमिति रयत शांके

| रोग | अग्नि | नृप | चोर | मृत्यु | रोगादिपंचबाण |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ४ | १५ | ९ | |
| ७ | ११ | १३ | १५ | १८ | ५धंश |
| २६ | २० | २२ | २४ | २७ | ५ बाण |
| | २९ | | | | |

३ ८ १६ २१ २५ ३०
५ २३ १८ २३ ३१
७ २४

शिवः
२८

१९ यदा पंच शेषाः ॥ रुग्वह्निनृपचौरामृत्युसंज्ञाश्च बाणोनवर्गहतशरशेषेशेष
कैकेसशून्यः ॥ १ ॥ रात्रौ चौररुजौ दिवा नृपतिर्वह्निस्सदा संध्ययोर्मृत्यु-
श्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेग्नि-चौरौ रवौ ॥ रोगोथ व्रतगेहगोपनृपसे
वायानपाणिग्रहे वर्ज्याश्च क्रमात् बुधे रुग्गनलक्ष्मापालचौरामृतिः ॥ १५

| रोग | अग्नि | नृप | चौर | मृत्यु | रोगादि |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ४ | १५ | १९ | एषांशेषु |
| १७ | ११ | १३ | १५ | २० | बाणाग्रा |
| २६ | २० २८ | २२ | २४ | २९ २८ | वर्जयंति |
| ३।५।१। ७ | ९ १२ १४ | १६ १८ | २१ २२ | २५ २७ | ३० |

॥ आर्द्राप्रांत्रिकोणे ३।१०।१९।५ चतुरस्र ४।८
मस्तं ७ पपूर्णं तिरवेटाक्ष्ररणाभिहास्याः ॥ मंदो
गुरुर्भूमिसुतः परे च क्रमेण संपूर्णदृष्टाश्च
वेधाः ॥ १६ ॥ यदा लग्नांशो पूर्णो लवमयतनु
पश्यति युतो न वेद्धाय्यं वोढुः शुभफलम

| ८ | २ | ४ | ६ | १ | शेषाः |
|---|---|---|---|---|---|
| रोग | वह्नि | राज | चौर | मृत्यु | बाणाः |

नक्षत्रं स्वयन्ति॥ लवधुनस्वामी लवमदनं लग्नमदनं प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितर
पाशेयमशुभं॥१७॥ लवेशो लवं लग्नपो लग्नगो दृशं प्रपश्येन्मियो वाशुभं स्या हरस्य
॥ लवद्यूनपोंशद्युनं द्युनपो लग्नं मिथो वेक्षते स्यात्कुमंगलकाया॥१८॥ लवप
तिशुभमित्रं वीक्षितं शं तनुं वा परिणयनकरः स्या [illegible] संपन्नस्त्र दृष्टं मदनलवय
मित्रं सौम्यमंशद्युनं वा तनुमदनगं दृश्ये चेद्वीक्षतेशा तवध्वाः॥१९॥ विषुवायणे
षु परपूर्वमध्यमा निद्यं सांस्तप० जेद्दितरसंक्रमेषु च॥ घटिकास्तु षोडश १६ शुभ
क्रिया विधौ परतोपि पूर्वमपि सत्यजेद्बुधः॥२०॥ देव [illegible] वीक्ष
शाष्टौ ८८ नाडपोंका दश खननपा १६० क्रमात्॥

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | २ | ९ | ६ | ८८ | ९ | १६० | नाडपो व |

संक्रमवर्ज्यी: संक्रमणेऽकीदृशा योर्के स्याति निंदि

शिवः
३९

ताः॥८०॥घस्मेतुलालो ॥१८ वधिरो मृगाश्वो ॥२०॥ह्रा त्रौच सिंहा जरूषाद्दिवांधाः
कन्या न्रयुक्कर्कटा ॥३१४ निशांधा द्दिने घटो स्पो निशि पंगुसंज्ञः ॥८२॥ वधिरा
धन्वितुलालयोपराह्णे मिथुनकर्कटींगणा ॥३१४ निशांधाः ॥ द्दिवसांधा हरिगो
त्रियास्तु ॥२१॥ कुब्जाम्रगकुंभांतिमभानि संध्ययोर्हि ॥८३॥ दारिद्र्यं वधिर
तनोर्दिवांधलग्ने वैधव्यं शिशुमरणं निशांधलग्ने ॥ कुब्जैर्गो निखिलवंशनाद्दि
निनाशमीयुः सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्नदोषः ॥८४॥ कार्मुकतौलिककुक
म्या युग्मलवेऽसषगेवा ॥ वद्दिभिर्वेदपया
मस्ताद्दिसिती खलुकन्या ॥८५॥ त्र्यंत्यन
वांशेन च परिणेया काचन वर्गोत्तमांसि

| दिने वधि | दिनेऽंधा | दिपंगु | संध्ययोः कु |
|---|---|---|---|
| तु. वृ. रात्रौ च. ८०पश. ८।९ | ५।११।२ रात्रौ चेत् ६।३।४ | कुंमरा मीमी | १०।११। १२ कुब्जाः |
| विवादे हृते दारिद्र्य | वैधव्यं शिशोध्वं | कन्या रोगार्तीः | धननाश |

२२

दृष्टित्वा॥ नोचरलग्ने चरलवयोगं तौ लिम्नगस्थे प्रपश्यन्ति कुर्यात्॥८६॥ व्यये
शनिः खे१० वनिजस्तृतीये ३ भृगुस्तनौ १ चंद्रखलाननप्रशस्ताः॥ लग्नेट्कवि
ग्लौश्चारिपौ ६ मृतौ ८ ग्लौर्लग्नेट्शुभागपाश्चमदे च मर्वे॥८७॥ त्र्यायाष्टसु
३।८।११ ६ रविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारिगः ३।११।६ क्षितिसुतोद्विगुणाय
२।३।११ गोज्ञाः॥ सप्तमव्ययाष्ट ७।१२।८ रहितौ ज्ञगुरू सितो ष्टत्रिघूनषट्व्य
यमदाद ३।७।१२ न परिहृत्प्रशस्तः॥८८॥ पापौ कर्तरिकारिपुगृहे नीचेल
गेकर्तरीदोषो नैव सिते रिनीच गदृग्गेन स्पष्टदोषोपि न॥ जौमेस्ते रिपुनीच
गेन हिनवेक्षौ मौदोषकृन्नीचे नीच नवांशके पि पापानि रिष्फाष्टारि १२।८
दोषोपिन॥८९॥ अब्दायनर्तुतिथिमासमपक्षदग्धा तिथ्यंधकाणबधि

शिवः
४०

रांगा मुरवाश्च दोषाः॥ न मूपंति विक्षुरा शीतो प्रिहर्के द्रकोले तस्त्रपापविफयुक्त नवांशादोषाः॥८०॥ केन्द्रे कोले जीवशुक्रायेर वौ वा लग्नेचंद्रे वापिवर्गोत्तम स्थे॥ सर्वे दोषा नाशमायांति चंद्रे लाने तद्वदुर्मुहूर्त्तीशदोषाः॥८१॥ त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषणात कं हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः॥ न वेदाये केंद्रागप तज्ञ लवेशोयदितदासमस्तं दोषाणां दहनुतवत्तं नमयति॥८२॥ द्वंद्वेज्ञ लग्नेवाःपं चेन्द्रौ रवौ साद्वि

| ४ | २ | ३ | १ | १ | ४ | ६ | ३ | १ | ३ सूर्यनाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ज्ञेयं |

| मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | १० | ५ | १० | ५ | ७ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ |

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के | यह्रा:॥ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३<br>३० | ५ | १<br>३० | २ | ३ | २ | १० | १० | १ | विश्वा: |

त्रयो गुरौ॥ रामामंदागुकेलारेसार्द्धैः कै
कं विशोपकाः॥ ८३॥ श्वश्रूः सितोऽर्की
श्वश्रूरस्त नु यी मित्रयः स्याद्दपिता मन
श्चाधि॥ एतद्बलं संप्रति नाम्यतां त्रिकं तेषां सुखसंभवदो द्विवाहतः॥ ८४॥ लू
न्मपक्षे सौरिकुनार्के पिचवारे वर्जेन्निस्त्रैयदिवास्या करपीडा॥ संकीर्णना
तर्हि सुतायुद्धे नला नप्रीतिप्राप्ते सा भवती द्व्यितिरेषा॥ ८५॥ गांधर्वादि
विवाहे कीद्वेद ८ नेत्र गुणो ३ नंद वः १ कु १ युगा ४ ग्नि ६ । ३ भू १ रामात्रिपक्षपा
मप्युत्तास्तं॥ ८६॥ विघोर्वलं मनी स्वावादलनकं उनचारकं गद्दागण
विरूपाणान्यपचवेदिकामंडपात्॥ विवाहाविहितांदुत्तिविरिचयेत

एर्गी

शि॰
४२

यो द्वादशो न पर्वमिदमाचरंरात्रिं न वर्षाणि मितेवासरे॥ ९७ ॥ मेषादिराशिज
वर्षवरयो वेदोऽश्रे नैलादिजेपनविधौ कथिता द्विसंख्या॥ पौलादिपूर्वदि
गक्षनगाद्रिबाणबाणाक्षबाणगिरयो मुनिभिस्तु केप्रिन्॥ ९८ ॥ हस्तोच्छ्रि
या वेदहस्ते समंता तुल्या वेदी समनो वामभागे॥ युग्मेषपक्षे षष्ठहीने
चपंच सप्ताहेस्यान्नमुपोद्धासनं सतं॥ ९९ ॥ सूर्येंदु नासिंहघटेषु पूर्वे
वेस्तं गोलिको दंडम्गोषु वायो॥ मीनाजकुंभेनिऋतौ विवादेस्यापा
ग्निकोण वृषयुग्मकर्के॥ १००॥ नास्मा मक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नं न चि
ला नो वावारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तो न सञ्चवी॥ नो ना योगो न व सति
नवलं ना पिया मित्रदोषागोभलिः सामुनिभिरुदितासर्वकार्येषु शा॥

स्ता:॥१०७॥ पिंडी न्दूते दिन लूतिद्दिमं लन्नौ स्पाद्धी स्तेत पसमयेगो धूलि:॥ संप्रत्ता
स्तेजूल घरमाकाले त्रेधायो ज्यास कुलग्नु नेकुयो दौ॥१०२॥ प्रस्तजाते गुरु
दिवसे सौरेसौ कैलग्नान्म त्योरिपुजवने लग्ने न ८ ८।१ चेंद्दौ॥ कन्यानाप्रा
स्तद्नुमदन म त्युस्थे १।१।१८ नौमे वोदु र्जोनेधन मद्जे चेंद्रे २१।२।२ सौरवं
॥ २॥ मेषादिके १ कैवृषप्राश ५८ नगस्ता ५१ स प्रेषव: ५१ सप्तप्राश ५१ गजाला:
५८ गोक्षा: ५९ रव नकुंडि ० कुरसा ६१ कुतकी: ६१ कुंगानि ६१ षष्टिन्नवपंच
६०।५८ नुक्ति:॥ ४॥ संक्रांति यानघस्रा घ्रेगंतिन्निरिव षट् दृता॥ लब्धेना
प्राद्दिनायो ज्यपानर्क्षस्य भास्कर:॥५॥ तनोरि षांप्रा कात्स्वै निर्वाणद्शासं
गुणा:॥ रामाप्तलब्धमंशातनोर्वर्गादिसाधने॥६॥ प्रकीर्ण्लग्नात्साधना

शिव:
८२

ऽोगपनुक्के नागोनिघ्ना स्वोदया त्खाग्नि २० नू क्रान्तू॥ नोर्गपंचु क्रंचांत्तरा नेदया
त्पंषक्षपा ५० न क्रं स्वेष्टना उपो नवेयुः॥ ७॥ चेन्नग्नार्के मायनावेकराशौ छिन्ने
षं पश्चोदयः स्वाग्नि ३० मक्रः॥ स्वेष्टः कालो लग्न न्नतंयदार्के छात्रेः शेषो ऽकी
त्तसंषउक्तां निष्ठनयांग ८॥ जुत्पाता न्मरूपा नदग्धातिथि र्दुशांष्ठ योगोस्त दाचेद्भो
श नस्तो मयास्त मयनंतिथ्यः॥ क्षय द्वीतिपातगंडांतं चसविष्टिसंक्रमदिनं तत्वंश्र
यास्तंतयात न्वंश्लेषाविचन्त्तयाष्टरिपुगा मापस्मवर्गास्तया॥ ९॥ सेंदु क्रूरख
गोदयाष्ण मुदयास्ताश्च छिद्रंडायुधानखार्जरंदग्धयोग योगमहितंया मित्रेल
त्तामघं॥ वाणोपग्रहणपकर्त्तरि तथा तिथ्यक्षे वारोत्थितं दुर्योग मथाईसा
मकुलिकाद्यान्वार दोषा नापि॥ १०॥ क्रूराक्रांतिविमुक्तनंग्रहणजं यत्क्रूरगं

तव्य नं त्रेयोत्स्यात दूल्तं च केतुदूलनं संध्योदितं भंतथा॥ नहृष्येयदाजिनंयकुशगतमं
सवीनिमासं त्यजेदुद्वाहेशुनकर्मसुयद्रूतं नालग्नस्य दोषानापि॥११॥ अथ
वधूप्रवेशः॥ समाद्रिपंचांकदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टि २६ दिनांतराले॥ शु
नः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेस्ववर्षात् ५ परतो यथेष्टं॥१२॥ ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रो
त्रवसुमूलमघानिलेषु॥ वधूप्रवेशः संनेष्टोरिक्तारार्केबुधेऽपरैः॥१३॥ ज्येष्टेप
तिज्येष्टमथाधिकेपतिं हन्त्यादिमेभर्तृगृहे वधूः शुचौ॥ श्वश्रूं सहस्येण सुरं
क्षयेत्तुलातं मधौतातविवाहतः॥१४॥ अथ द्विरागमं॥ चरेद्दथौजवर्षे दोने
घटालिमेषगेरवौ॥ रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे॥१५॥ मृ युग्म
मीनकन्यकातुलावृषेविलग्नके॥ द्विरागमं लघुध्रुवे चरेस्रपे मृदुश्रुति

शिवः
४३

॥१६॥ दैत्येज्यो ह्यपि मुखन दक्षिणे यदि स्यात् गच्छेयुर्न हि शिशुगर्भिणी नवोढा ॥ बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वंध्या भवति गर्भिणी त्वगर्भा ॥१७॥ नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः ॥ नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्नहि ॥१८॥ पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसंभवं स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः ॥ भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां मुने भरद्वाजकुलेन तथा ॥१९॥ इति श्रीमद्दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञराम विरचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ विवाहवधूप्रवेशद्विरागमनप्रकरणं षष्ठं ॥ ७ ॥ अथाग्न्याधानराज्याभिषेकप्रकरणं ॥ स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगोदिनेशे मिश्रध्रुवांत्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ॥ रिक्तासु नो कुजशशी जन्मगोननी चेन्नास्त

मुने:

गते न विजितेन च शत्रुगेहे॥१॥ नीचर्क्षनीचांशकुंभनवांश लग्ने नाप्नोति
नो रविशशी स्वकुजे त्रिकोणे॥ केन्द्रस्थे षट् त्रिभवगे च परे स्त्रिलाभ सुट्
स्वास्थितो नृपश्च नश्यति पुते च लग्ने॥२॥ चापे जीवेत नुस्थे वा मेषे नो भव
रेद्युने॥ षट् त्र्याये दा॥३॥११ अरे वोवास्पा ज्ञालाग्नियेजति भ्रुवं॥ दुस्थग्न्या
धानां॥ राजो निषेकः॥ राज्ञा निषेकः शुनलत्तरायणे गुर्विनुशुक्रे रु
दिते बलान्वितैः॥ नो मार्के लग्ने प्रदप्रोषा जन्मपे न्नो चैत्रस्तिकारनि
शामलिम्लुचे॥४॥ षष्ठाष्टव्ययेऽपि मदुष्क वोडाभिः षष्ठे दये चोपये तनो
पापैस्त्रिषष्ठागतैः शुभयदैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिमे स्थैः॥५॥ पापै
र्न नो रुभ्रुधने माताः सुतेपुत्री निरिथ्ये व्ययगैर्दरिद्रतां॥ स्यात्वेल्न सो

शिवः
८८

87

न्नष्टपदोघुनांवुगैः मंदेज्ये जंकें द्रगते शुभग्रहैः ॥ ८॥ गुरौ लग्नकोणे कुजेऽरौ
सितः खेसुराज्ञासहायोद्रतेराजनक्ष्मापतृतीयायगेऽगौ रिसूर्यौ रविं वध्वेस्तु
रुष्णेन्दु रिःफौ स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ९॥ इति श्रीमद्दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामवि
रचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ वध्वाधानराजाभिषेकयोः प्रकरणं सप्तमं ॥ ७॥
अथ यात्राप्रकरणं ॥ यात्रायां प्राग्विदित्वा जन्मनां नृपाणां द्वाद तस्य द्वि
समनुरूजन्मनां च ॥ प्रश्नाद्येरुत्तमानिमित्तकूलनभूतैर्विज्ञाते स्युरस्तु जन्म
नेबुधः प्रदद्यात् ॥ २॥ जननराशितन्नस्य द्विलग्नगे तदधिपौ यदि वा ततः
एव वा ॥ त्रिरिपुखायर ३।६।१०।११ गृहं यदि चोयो विजय एव च भवेद्वसु
धोपतेः ॥ ३॥ रिपुजन्मलग्नमथाधिपतौ तयोस्तत एव चोपचयसम

८

चेन्नवेत्॥ हिबुकेषु नेष्वपि न वर्गीकस्तनौ यदि मस्तको द्युगहं लदाय:॥३॥
यदिष्टछत नौरु न्विरा वसुधामु नवस्तु यदि श्रुतिदृष्टी नंगगं॥ यदिष्टछेति
चादरतश्चन्द्र नंग्रह दृष्ट युतं चर लग्नमपि॥४॥ विधुकुजयुतलग्ने मोरि
दृष्टे ऽथ चंद्रमतिजन्मदन ७ सेस्थे लग्नगे नास्कुरोपि॥ हिबुक ४ निधन
८ होरा १ द्यू नगे ७ वा पिपापेक्ष यदि नवतिजंगः प्रथमकर्नुस्तदानी॥५॥
त्रिकोणे कुजात्सौरिश्च कजजीवाय दैको पिवानोगमो वर्गच्छ णीकाव
नीयांश्च मध्येत योपाग्रहः स्पात्सवकीयांहि शंप्रत्युतासोनयेत्॥६॥
प्रथमे गम्य हिगी ग्रातेवदः पंचमगोयः॥वो नयाहूलनयुक्तः स्वामांशं
नयते ऽमो॥७॥ चतुर्मेषमिंदे सुयात्रात्रपा स्ताशानि ज्ञोषशनोरा शिम

शिव:
४५

89

ध्या॥ रवौ कर्कमीनालिसंस्थे तिदीर्घो जनुः पंचसप्तत्रितारा चातेष्टा॥८॥
न षष्ठी न च द्वादशी चाष्टमी नो सिताद्यातिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता॥ द्वया

| पूर्व॥ | दक्षिण | पश्चिम | ॥उत्तर | दिशाशूल |
|---|---|---|---|---|
| शनि | बृहस्प | र.शु. | मं.बुध | दिक्शूलं |
| ज्येष्ठा | पूर्वाभा | रोहिणि | उत्तराफा | नक्षत्रेषु |

दिक्षु मैत्रेंदुजीवातिदस्तश्रवोवा सर्वे रेवया यात्राप्रशस्ता॥९॥ नष्ट वेदिग्गाक्रेजेनविघ्नप्रोरिवारेन ध्यानचाजपरनेगुरो यमदिग्गि
नदैत्येज्यग्यो॥ नपाशिदिक्शिचान्त्येकुजबुधेऽर्यमर्क्षे तथा न सोमवक्रकु
जीवजे त्वयजी विनार्थी बुधः॥१०॥ पूर्वाक्लिष्ट वा मिश्रभैनेत्स्पतेया
त्रान नमध्यार्कके तीक्ष्णारख्येरपरार्कके न लघुनेत्रो पूर्वरात्रे तथा

| कार्ये पुष्या | पूर्वा | मघा | परा | पूर्वाषा | मघा | परा | सवृ | (वि)पुष्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त्रीन कार्याः | श्रव मिश्रे | ती क्ष्णे | लघु नै: | मृदु | उग्रे | चरे | स्व.द. म.ग. पुष्ये | |

॥मैत्रार्कयेनै चमध्यगत्रिम
मयेचोग्रैस्तथानोभ्वरैराश्व
तो रुरिद्रस्तपुष्यपाशितिः
स्यात्सर्वकालेष्व जा॥१॥

पूर्वाग्निपित्र्यांतकनारकानां न्त्यैक विंशेशतुरंगमा स्युः॥ स्वाती विशो रवेन्दु
भुजंगमानां नाड्यो निषिद्धा मनुसंमितास्ताः॥२॥ पूर्वार्द्ध याम्यमाग्नेयमघा
निलानं त्यज्येद्धि चित्राद्दिमयो नराह्वैः॥ नृपसमस्तांगमनेजयार्थी स्वातीम
घांचोशानुसोमनेन॥ नमो नुकूतारास्म तानिव्वसंख्या १२ष्य नोजीवपक्षोमध
तष्पा।पिभोगणाः॥ नदाक्रांतमंक त्रीरीसं ज्ञमुक्तं नतोक्षेंदु मंरव्याभवेज्जस्तेना

शिव:
९५

| ॥अकुलगणः | कुलाकुलगणः | ॥कुलगणः॥ |
|---|---|---|
| स्वा॰ ज॰ ध॰ रे॰ अ॰ नु॰ कृ॰ फू॰ मृगा(उत्ता) | म॰ पू॰ आ॰ ५ नि | कफा॰ प॰ ना॰ क॰ णा॰ अ॰ पुष्यमघम |
| | | अ॰ चि॰ वि॰ श्रे |
| ११४।७।१८।१२ | १५।१।११६।२ | २२।१३।१८।१४।३० |
| स॰ चं॰ श॰ बृ | बुधवारः॥ | भृ मं |
| या॰ पि॰ नोजय॰ | संधियाः॥ | स्याघिनोजय |

मा॥१४॥मार्त्तंडेमित्युपसर्गेरिम कूरः चेज्जीवपक्षेऽशुनायायाम्नास्पो ह्रिपरीतगेज्ञयकूरीद्वौजीवप क्षेऽशुना॥यस्तर्क्षेमितपश्चत अशुतंकरंयस्तातथाकत्तरी यायीदुस्थितिमानविवर्जय करौतौद्वौतयोःजीवगो॥१५॥स्वात्यंतकाद्दिवसुपोष्मकरानुराधादित्यश्र वाणिविषमास्तिष्ययो॥१३।५।७।१८।११।१३।१५ कुलाः स्युः॥सूर्येन्दुमंद गुरवश्चकुलाकुलाज्ञाम्रलांबुपेशविधिनंदशाषडूढितिष्यः॥१०।६।२।



93

१६ फल्गुन्यौ आश्लेषानुकर्णी हस्तादित्रोस्रचित्रास्तथाश्रुकारो कुलसंज्ञकाश्च ति
थयोऽकैंद्राष्टवेदैर्मिता। १२।१४।८।४याथी यद्दकुलेयथीच समरेस्थायी
चेत कुले संधिस्याद्वयोः कुला कुलगणे स्थायी यायोर्युध्यतोः॥ १७॥
अथ पंथा। राहुः॥ स्पष्टे मैदिन्य पृष्ठोरगवसुजलयद्दशा मेत्रालपथार्थेया
स्याज्जांघ्रीन्द्रकर्णादितिपित्र्यपवुनो ऽनुराधा नानि कामो॥ वह्न्या ह्रीबुध्न्यचि
त्रानि ऋतिविधिभगारव्यानि मोक्षेऽर्थराहोदृ [illegible] पक्षे विश्वाय मनुदि
नकरक्षोलिपथ्यादिराहोः॥ १८॥ धर्मगो भास्करे विज्ञ मोक्षे पापी विज्ञगे
धर्मोक्षोस्थितः शस्यपते॥ कामगे धर्ममोक्षार्थगः शुभने मोक्षगे के
वलं धर्मगः प्रोच्यते॥ १९॥ अथ तिथिचक्रं। पौषे पक्षत्यादिका द्वादशीन्तं

ग्रि.व:
४१

d3

| ॥ धर्मः ॥ | ॥ अर्थः ॥ | ॥ कामः ॥ | ॥ मोक्षः ॥ |
|---|---|---|---|
| अ॰ पुष्य॰ अश्ले ष॰ पू॰ विशा खा॰ अनु राधा | भ॰ पू॰ तीर्था॰ मेषाश्रव ण पुनर्वसु मघा स्वाति | कृत्तिका आर्द्रा उत्रा चित्रा मूल अभिजित् उ॰ फा॰ | रोहिणी पूर्वाषाढा मृग पू॰ भ॰ रेवती उत्तराषाढा उ॰ भा॰ ह॰ |

१२ तिप्पो मा घा दौ द्वितीया ह्कि स्ता॥ कामातिरतः सुभ॰ तीया दिक्षयानेत्रा आदौफलं तत्र वक्ष्ये॥ २०॥ सौख्यं क्लेशो १ २ जी ति ३ र्थ्यो ४ ग मश्व भ॰ सं १ नैष्ठ्यं २ निस्वता ३ मिष्टता च ॥ द्रव्य क्लेशो १ दुःख २ मिष्टाप्ति ३ तर्थो ४ लाभः सौख्यं २ विघ्ननाशः ४ ॥ २१ ॥ ला भो द्रव्याप्ति २ द्धिनं ३ सौख्यासुखं ४ ॥ नीति १ ली नो २ भ॰ सु ३ स्यो गमश्व ४ ॥ लाभः कष्टं २ द्रव्यलाभः ३ सुखं च ४ कष्टं १ सौख्य २ क्लेशा ३ लाभो ४

मंगलं ३

| पौ | मा | फा | चै | वै | ज्ये | ऽ।आ | श्रा | भा | आ | का | मा | मू | द | प | उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | सो | के | मी | ऽर्थी |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | श्र | ने | निः | निश्च |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | म | दु | ऽमा | ऽर्थी: |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ला | सो | मंग | वित्त |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ला | ऽ | धनं | सोख्य |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | मी | ला | क्ष | ऽर्थी |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ला | कु | दु | ऽ:दु: |
| ८ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ७ | कु | सो | के | सु |
| ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ८ | सो | ला | फ | कष्ट |
| १० | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ९ | के | क | क्षमा | धन |
| ११ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | १० | म | ला | ध.ना | श्रमं |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | श्र सं | सौ. स्व | म सु | ऽति. कष्ट |

सुखं च ४॥२॥ सोख्यं
१ला २कार्यसिद्धि ३
श्रकष्टं ४ के शः १ कष्टा
त्सिद्धि २ र्योदि ३ धनं च ४
म सु १ ली भो २ दुःख ना
श ३ श्र म सं ४ म सं १
सोख्यं २ म सु ३ रतं स्व क
ष्टं ४॥२॥ तिष्य सीवार
युति राद्रि ७ गजा ८ ग्नि

शिवः
४८

२ तष्टा स्त्या न त्रयेत्रविपति॰ प्रथमेतिदुःखी॥ मघो धूनक्षतिरथो चरमोष॰ तिस्वा
त्स्या नत्र येकयुजि सौख्य जयौ निरुक्तौ॥ २४॥ रवौ भेतो ऽब्ज भौम्नि तिर्नि
गा वपुशेषि ताद्य २ग॥७ मरूड लो नपा स्प तोत्रिषाष्ठिता भ मो नवता॥ २५॥
शा घूणं कलं सूर्य ने तो त्र्यग ण्षपञ्चा दितिष्या दिनवा मरेण॥ युतं न वांप्रन
ग १ पूषकं चे त्स्याह्नी वरं नजमनेतिशस्तं॥ २६॥ मू ५पं चा ५ क २ हू ना २ द
दि १० ग्व ह्नि २ सम १ वे दा ४ षे ८ णा ११ कृ १२ खवौघाता नारवचंद्रः॥ मेषा
दी नांराज सेवा विवादे वज्यौ युद्धाद्यो चना न्य त्रवज्यौ॥ २७॥ अथ केषि
त घात चंद्रे विशेष ऽकुः॥ आग्नेय लाग्ना जलयपित्वासवरोद्रनेग॥
मूलनक्षा स्त्या जपादर्शेपि अमू नो जने क मानता॥ २८॥ मू मि २ ध्र २ मि ३

| मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | राशी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ५ | ९ | २ | ५ | १० | ३ | ७ | ४ | ८ | ११ | १२ | घाचं |
| ह १ | चि | श ३ | म ३ | ध १ | श्र २ | स २ | रो २ | मा ४ | मृ ४ | स ४ | पू ३ | पाद घात |
| १ ६ ११ | ५ १० १५ | २ ७ १२ | ३ ८ १३ | ५ १० १५ | ४ ९ १४ | १ ६ ११ | ३ ८ १३ | ४ ९ १४ | ३ ८ १३ | ३ ८ १३ | ५ १० १५ | तिथयः |
| सू | शं | नं | बु | श | श | बृ | शु | शु | मे | बृ | शु | वार |
| म | ह | स्वा | अ | मू | श्र | श | रे | भ | रो | आ | श्ले | नक्ष |
| १ | २ | ४ | ७ | १० | १२ | ६ | ८ | ९ | ११ | ३ | ५ | लग्न |

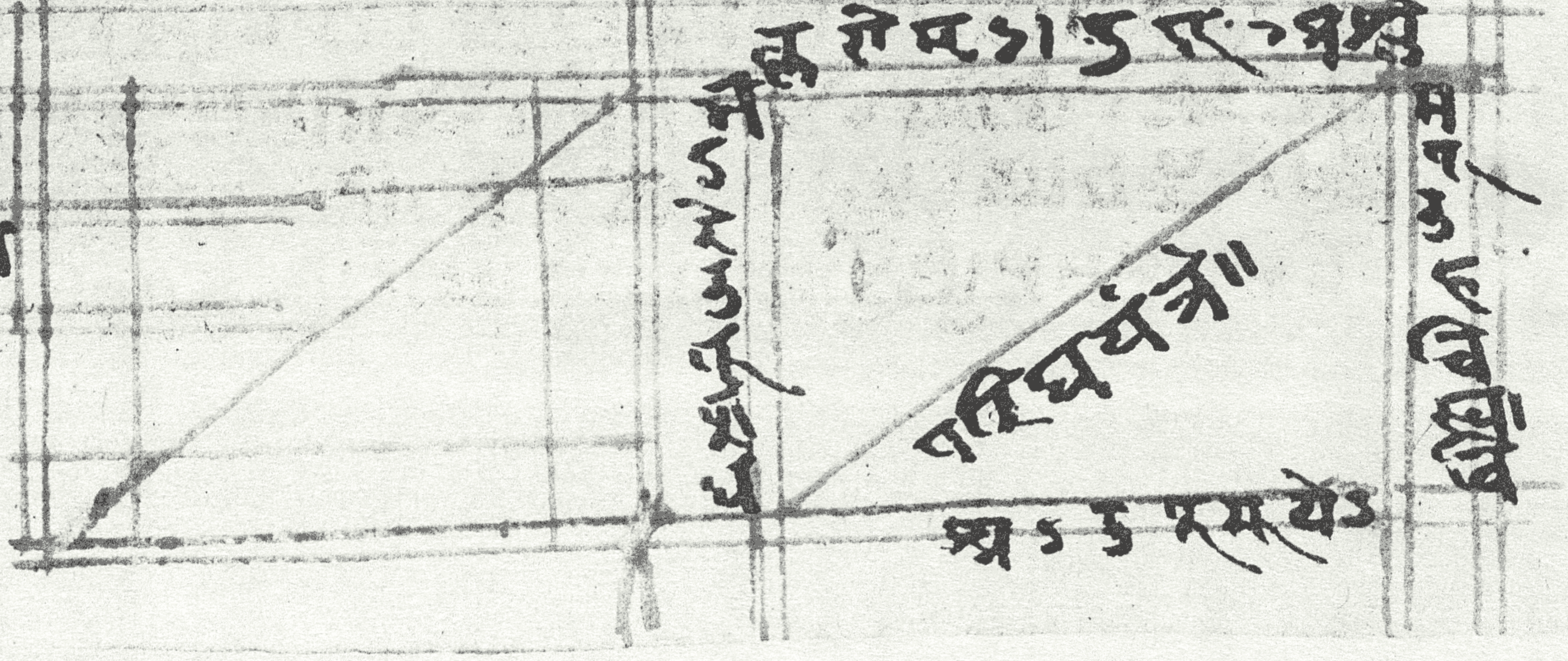
श

| ईशान ८ ३० | पूर्व १ ९ | ३ ११ आग्नि |
|---|---|---|
| उत्तर २ १० | योगिनी चक्रम् ॥ | दक्षिण ५ १३ |
| वायु ७ १५ | पश्चिम ६ १४ | ४ १२ नैऋति |

श्लो वः ४८

र १३।म ३ बु ३ ग्ल द्या ४ धि ८ युगा ४ ग्नयः ३।। या लच्चं रोहिण्या आदा मेषाद्भुमी
मनीषिभिः।। २१।। गोऽश्वी ऽजे पेचा नतिथि स्तु पण्णी भद्रा न्युक कर्ककेष्य
नंदा।। कौ ८ पी ज १ यो नैकघटे चरि क्रा जया धनुः कुं न ह रौ न प्रास्ता।। ३०
।।नक्रे मो मो गोहरि स्त्री घु मं दस्र ग्रो ऽहे ऽ केंजि मे ऽ ष्टक कैं।। शुक्रः को
८ दं ऽ लि मी नेषु कुंज ७ रके जी वो घा त वा रा न प्रास्ताः।। ३१।। मघाकर

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | वा | प | नै | द | ग्न | र |
| १।पा।पा | ग्न-पा | र-पा | ६-पा | ३-पा | वा-पा-पा | प-पा |



स्वातिमैत्रमूलश्रुत्यवुपांत्यभे॥ याम्याब्राश्लेषासापीतिमेषादेर्घातभंनसत्॥
२२॥ मं१मि५च२वृ४द्वि५सूर्यो१२गा६श्टां८के९प्रा११गिलि३ग्रायकाः॥मे
षादिघातनक्षत्राणियात्रायांवर्जयेत्सदा॥२३॥ नव९नं१शिव११वक्त्रयो
२ल्लविश्वे१३र्क१२१४प्राक्रमा१४१६स्तुरंगतिष्णः॥१५॥ द्वि द्विशो
२१०मासवृक्ष२०१८पूर्वसुप्तास्तिपयः सम्मुखवामगानशस्ताः॥२४॥
कौवेरीतोचैपरीत्येनकालिनावारेर्कादिषुसंमुखेवतस्यपाशाः॥ रात्रावेतौवेप
रीत्येनगण्यैर्यायात्रायुद्धेसन्मुखैवर्जनीयौ॥२५॥ पूर्वादिषु चतुर्दिक्षुसप्त
सप्तानलर्क्षतः॥ वायव्याग्नेयदिक्संस्थंपारिघंनविलंघयेत्॥२६॥
आग्नेदिशिस्थपरिघात्पूरक्तनदिग्नैरवंप्रदक्षिणगताविदिशाप्यके

शिवः
५०

पृं

त्पो॥ भावप्रपके पिपरिघं परिलंघग्न छेच्छूलं विदायय दिदिक्रलनुरुद्धि
रास्ति॥३७॥ मैत्रार्कपुष्याश्विन मैर्नैर्ऋतक्रा या त्राप्युना सर्वदिगमुत्तज्ञेः॥
वक्रीग्रहः कैन्द्रगतोऽस्य वर्गो लग्ने दिनं चाप्यगमेनिषिद्धं॥३८॥ सौम्या
यनेस्तूर्य विधून दोत्तरां प्राचीं व्रजेन्नोयदि दक्षिणायने॥ प्रसव्यमा
र्गं चेतयोर्दिवानिशं जिनाय नत्वेऽथ वधोत्सवो भवेत्॥३९॥ उदेति य
स्यां दिशि यत्रयाति गोलभ्रमाद्वाप्यक कुप्संधौ॥ त्रिधीचयतेस सम्मुखे
वक्त्रो यत्रोदितस्तांतु दिशं नयायात्॥४०॥ वक्रोनीचोपगतेस्तगोः
सुतेराजा व्रजन्याति वद्दिविद्विषात्॥ बुधोनुकूलेयदि तत्र संवरं नरिपू
नजयेनैव जयः श्रीतिंदुजः॥४१॥ यावक्रेंद्रः स्फूर्तिकाद्येपादेसु क्रोंभो

प्रपन्ना

नरुष्टो ग्रहे॥ मध्येमार्गे नागीवास्तेपिराजा तावत्तिष्ठेत्सन्मुखे लेपितस्य॥४२॥कुं
नकुंताग्रकोत्या उपोसर्वथाय त्नतो वुधैः॥ तत्रप्रयातुर्नृपतेररर्थनाशः पदेपदे
॥४३॥ जनिर्ले लग्नजन्म नृपतीश्च भयहीनवस्तद्वात दृश्येषु भोगमः॥प्र
थमीनलग्न कृत्तवालदंष्ट्रे केचालितस्य वक्रमिद्व लोआयते॥४४॥ ज
न्मराशितनु तोष्टमेथ वाम्बारि भाद्यरिपुजे तनुस्थिते॥ लग्नगास्त दृधि
पायदाथ वास्पुर्गे तेहि नृपतेर्मृति प्रदं॥४५॥ लग्ने चंद्रेवापि वर्गोत्त
मस्थे यात्राप्रोक्ता वांछितार्थैकदात्री॥ अंभोराशौ वादरदं शेषग्रस्तेनो
यानं सर्वसिद्धिप्रदायि॥४६॥ दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदा
त्री जयकारिणी च॥ हानिं विना शोरिपुतोभयं च कुर्यात्तथा दिक्प्रति

शिवः
५८

ल्लो म लग्ने ॥ ४६ ॥ राशिस्वजन्मसमये श्रुतं संयुतो यो यः स्वारिशांनिधन
गोपि बवेशि संज्ञः ॥ लग्नेनापगः समागमने जयदेशाथ रूप यो गे मे मेविजय
दा मु निभिः प्रदिष्टः ॥ ४८ ॥ सूर्यः शि नो न्यामिसुतोथ गुरुः शनिः शशी ज्ञ
श्च बृहस्पतिश्च ॥ प्राच्यादिनादिक्षु विदिक्षु वापि दिशामयी पूर्वाः क्रमपूर्वाः
प्रदिष्टः ॥ ४९ ॥ केंद्रे थ दिग्गुची योग छेदवनीपूः ॥ ज्ञाल्वा दीनि तास्मिन्नेया
दरिसे नाम ॥ ५० ॥ प्राच्यादौ तराणि स्तु नौ २ स्वासु नो लानव्यये १ । १२ स्तु

| ईशान ४ । २ | पूर्व १ | आग्नेय १ । २ |
|---|---|---|
| उ. बु | [illegible] | दक्षिण मंग |
| वा चं ५ । ६ | पश्चिम शु | नैऋत्य राहु |

मृतः कर्मस्थो १० पतमोनवा षमसु देसोरि
स्तयासप्तमेचंद्रः शत्रुग दाला जेपि च बुधः
पातालेन गोगीष्पति र्विनिचा लग्ने विलग्न

सदनाछ्वानाटिका कृर्त्तिता:॥५१॥ छगोगला। शिवोस्थिलाहि नोग छल्पयेछिष्ट
न॥ मित्रेप्रस्था यथा केचं स्थिलाम लेनक्रूरं स्तथा॥५२॥ प्रस्था८ यस्तलानिलन
स्तोचिह्मस्थिलाजयार्थप्रवसो हृ देवो॥ न स्वं मपुष्ये। निजपी॥ मिचौकरात्रौषि
नः स्मांलमतेऽवनीपा:॥५३॥ तुषः का॥ नोविनापूर्वगोरवलिः पश्चिमाविना
॥ विनोत्तरांति शीघ्य मनुयानेया स्यावि नातिजितरा॥५४॥ लग्नाज्ञावाः
कमाद्देह१ कोश२ धानुष्क३ वाहनं४॥ मंत्रोपारि६ मार्गा७ ग्रायुष्य८ हृ९ तु
व्यापारा१० गम११ व्यया:॥५५॥ केंद्रकोणे सौम्य खेटा: शुभोंशु: यौ नै
पापात्स्राय षट् खेषु चंद्र:॥ नैशे लग्नांत्यारिं धेपाति: खे१० लग्नकोन
गेनटूनगं स्पारिं प्रयोगा॥ त्रिद्धिरातिपती ना मन्लगुणैरपि ससदेवानां

शिवः
५२

॥ चौराणामपि शाकुनैरुक्ता नवति मुहूर्त्ती दृषिमनुजानां॥ ५७॥ सहजेर विंदि
मभे शशी तथा शांतिमंगलो रिपुगृहे स्थितः सुते॥ हिबुके बुधो गुरु र्पी ह
लग्नगः सहजय सरीन्म्रचानि तोचिरा नृपः॥ ५८॥ भ्रातरि सौरि र्भूमि
सुतौ वैरिणि लग्ने देवगुरुः॥ आयगाने केंद्रात्रु जयश्च दनुकूलो दे स्वगु
रूः॥ ५९॥ तनौ जीव इंदुमिंतौ वैरिगो र्कि: प्रयातो मही श्चो जयेत्सु वर्षात्र
नृः॥ ६०॥ स्वलग्नगतः स्यात् देवपुरोधा:॥ लाभगृह नस्थ्यैः शेषग्नेचोगैः॥ ६१॥
सूनेन्द्रर्चंद्रे समुदय गेर्कै जो वेश्च केवि दिधिनस सस्थ्ये॥ दृश्यपो बोचा ज्ञितन
रेणो जेता प्रांरू नगरूडडु वाहीनुः॥ ६२॥ वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि
वा सरनाथः॥ लग्नः गते भृगुपुत्रे सुः शल्नमाइनसर्वे॥ ६३॥ उदये

रविर्यदि सौरीररिगणशी दशमेपि॥ वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनीवशमे
ति॥६४॥ तनौशनिकुजौ रविर्दशमे बुधस्तनुसुतो पलानः॥ दशमेपि
त्रिगा नरिपुनेषु भूसुतशनी गुरुस्तनुजास्तथावलयुता॥६५॥ समु
दयेगो विबुधगुरौ मदनगते हिमकरणे॥ हिबुकगतौ बुधसूनुजौ स
हजगताः खखनखचरा॥६६॥ त्रिदशगुरुस्तनुगो मदनगते हिम
किरणे रानिरायगतः॥ शितगप्रौज्ञावपि कर्मगतौ रविसुतनुमि
सुतौ सहजे॥६७॥ देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे वासरनाथे रिपुभव
नस्थे॥ पंचमगे हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरि सुहृदिपि तस्थ्र॥
६८॥ हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ त्रिदशपति गुरुहि केन्द्रस्थि

शिवः
५२

तनयगृहे मे जातिधर्मास्थितेतोयदि भवति निर्विलग्नं द्रमा:॥ ६९॥ लग्न
स्थे नुखवगेहे न वाष्टमरस्थे हि बुकसहोदरजाते नगृहस्थ:॥ कविरि
ह कुन्नी स्थितेदशो बुमुचयजा नकर: इव जुयोग:॥ ७०॥ लग्नेनय
हि जीव: पापयदि नाने कर्मीप्पापि वा चेष्टा ज्याधिगमस्मात्॥ ७१॥
रिपुलग्नकर्मीहि बुके प्पापीजेपारि वी। सितेष्टजनन भोगमलो॥ बध
लग्नमूलस्थ गृहे बुजय: परिवर्जितेष्वष्टजनामधरे:॥ ७२॥ सूने
बुधपूज्ञक्षेत्रौ चंद्रोहि बुके वातकूल्फलं मुक्तं सर्वे मुनिवर्यै:॥ ७३॥ रिपुते
नुनिधनष्ठक्षे जीवेन्द्र वाप्पापापकुधन्दगजौ तु यैश्वगेदास्थितो॥ मदन
नवतगर्भ्वं द्रमावी बुग: प्पापी सुतनंगुजां तर्गतष्ठांद्रमा॥ ७४॥ सित

जीवसौमबुधभानुतनुजातशुभन्मध्यारिहिबुकेत्रिगदेवेत्।। क्रमतोरिसो
दरखमूर्त्तवद्धोशाहिबुकायगोगुरुदितोखिजुखेदौ।।७५।। सदूजेकुजो
निधनगस्त्रजोर्गवौमदनेबुधोरविरगेतनौगुरुः।। अथचैत्सुरीज्य
सितन्नानुवीजन्४त्रिगताहिमोरिरुधिरोरिपुस्थितौ।।७६।। एको
नेज्ञासितेषुपंचमतपकेंद्रेषुमौगस्तथाद्वौचेतेष्वधियोगएषुसकृ
न्नायोगाधियोगसत्तः।। योगेक्षेमंगमथाधियोगगमनेक्षेमंरिपू
र्णावर्द्धनाथौक्षेमयुगोनतोज्ञजनतेयोगाधियोगेव्रजन्।।७७।। पप
मासिसिताद्दशमीविजयाख्याकुसुसिद्धिकरीकथिता।। श्रवणर्क्षयु
तासुतराख्यभेदाथ्पतेस्तुगमेजयसिद्धिकरी।।७८।। चैतोनिमित्ता

शिवः
५८

शकुनैरतिसुप्रशस्तैर्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्वीपतिः प्रयाति ॥ सिद्धिर्भवेद्य
पुनः शकुनादितोऽपि चेत्तो विशुद्धिरधिका न च तां विनियात ॥ ७९ ॥ व्रत
बंधनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडोत्सववास्तुतकसमावेशो ॥ न कदापि च ज्येष्ठका
ले विधेर्द्यूनवर्षतुहिनोपि समयान्ते ॥ ८० ॥ महीपतेरेकदिने पुरात्पुरं य
दा न वतां गमनप्रवेशौ भवतः पुरप्रतिशुक्रयोगिनी विचार्य्ये न्नैव
कदापि पंडितः ॥ ८१ ॥ यद्येकस्मिन्दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः ॥
तर्हि विचार्य सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत् ॥ ८२ ॥ प्रवेशं निर्गमात्त
स्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ॥ नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥ ८३ ॥
अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा नत्वा विप्रानर्चयित्वा द्विजेशं ॥ दत्वा दा

नंबा्रास्तणे न्योद्गिीर्षधा त्वाचित्ते न्नमिपालो निगच्छेत ॥ ८४ ॥ कुल्माषां १ स्ति
लतंदुलान न पितथा माषांग्च गर्व्यं दधि ४ त्वा ऊपं ५ दुग्धं ६ मथ्ये ए मांस ७ मप
रं तस्येवर क्तं तथा गतदु ल्पायस ८ मेवचाषप्लतलं १० मार्गे च ११ मांसं १२
तपा षाष्टिकं प १३ चप्रियंगु १४ पूप १५ मध्य वाचि त्रांडजा १६ सफलं ॥ ८५ ॥

[illegible]

कौमे सारि १८ । १९ गौधिकं च २० पलल २१ पणलं २२ हविष्यं २३ रूपा स्क्षेसा

शिवः
५५

नु

त्रिसरान्नमुद्गमपि वा यिपिंप्वानां तथा॥ मत्स्यान्नं खलु चित्रान्नं मधु वा ह्य-
न्नमेकं क्रमात्॥ नस्या भक्ष्यमिदं वि-चार्य मतिमान्भक्षितत्पालोकयेत्॥८६

| पूर्वे | दक्षिण | पश्चिम | उत्तरः | सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | ॥वारेषु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घृतम् | तिलतंदुल | मत्स्यान्न | पयः | चित्रान्न हरिद्रा | दधि | कां | उष्ण दुग्ध | दधि | क्षीरान्न | तिलौदन | दोहद |

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमं॥ नक्षत्रे दोहदं दिक्प मा मां पु
वीदिकां व्रजेत्॥ रसालं पायसं कांजीस्थलं दुग्धं तथा दधि॥ पयोस्थलं
तिलान्नं च भक्षयेद्वार दोहदं॥ ८७॥ पक्वान्नादि तोकं दद्यन्नं तंदुलवारि सर्पिःश्रा
णा हविष्यमपि दैमजलं लवणं॥ नुक्का व्रजेद्दुचक भैवु च च नुम्रतं यावं न्न

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

पायसगुडान्नघिरंसमु
कंा॥८८॥उद्दृत्यप्रणमत
एवदक्षिणाग्रेदात्रिंश
त्पदमानिगत्वादिपया
नं॥ ? पारोहेत्तिलघ्व नद्देमनाभ्रपात्रंदत्वा दौगण कवरा यचूम्रगछेतूा॥८९॥
म्राच्यां गछेऽजडनैवदक्षिणस्यां रथेतत्व॥ द्विपिप्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्या
नरेनेपः॥ ९० ॥दवगहोद्दागुरुसद्दनाद्वास्वगहान्मुरवकलचगदाद्वा॥
प्राप्रपद्दविष्णुविप्रानुमतःपप्रपन्नएवन्मंगलमेयात्॥९१॥कार्यघ्रेद्दिग
मनस्पचेद्दिलवो॥द्देवाद्विनिरुपवीतमायुधंच॥ क्षौरचामलफलमाम्र

शिवः
५६

चालनीयं सर्वेषां नवतियदेवहस्त्रियं वा॥८२॥ गेहाद्गेहांतरमपि गमस्तु हि या
त्रेतिगर्गः सीम्नः सीमांतरमपि स्याद्गुर्वाणं विप मात्रं॥ प्रस्थानं स्यादिति कश्यप
तेष्यो नरद्वाजएवं यात्राकार्या वहिरिह पुरस्या द्वासिष्ठो ब्रवीति॥८३॥ प्रस्था
नमत्र धनुषां हि शतानि पंचके चिच्छतं द्वयमुशंति दशैव वा मे॥ संप्रस्थितो
यस्तु मंदिरतस्त्र यातो गर्ग नमहिसु नदापि प्रयतेन कार्यः॥ ८४॥ प्रस्थाने भूमि
पालो दशाहं विप्रामान्नि याप्य तैकत्र तिष्ठेत् सामंत स प्तरात्रं तदितरमनुजः पं
चरात्रं तथैवा कूर्दस्य गच्छेत् शुभाहे स्वयमगमनदिनात्सप्तरात्राणि तच्चाष्टौ
तद्दिने वा रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात्॥८५॥ दुग्धं मांसं पूर्व मेवात्रि
रात्रान्नक्षौरं स्यात् पंचरात्रात् पूर्वं॥ क्षौरं तैलं वा समरेस्मिन्नविमिश्रं त्याज्यं

यत्नाद्भूमिपालेन हन्तुं॥९६॥ मुक्तागच्छे यदि चेत्तैलगुडक्षीरपक्वमांसानि॥ विनि
क्षिप्तेतेसु रुगणः स्त्रीद्विजमवमान्यगच्छतो मृत्युं॥९७॥ यदिमासु चतुर्षु पौ
षमासादिषु वृष्टिर्न वेदकालवृष्टिः॥ पञ्चमतपेषा दांकिता न यावद्धसुचास्या
न्नदितावद्देवदोषः॥९८॥ अल्पायां वृष्टौ दोषो स्योन्न यस्माद्दोषा भूया
न्॥ जीमूता नूनं निर्घोषैर्दृष्टो वा जातायां न दोषः॥९९॥ सूर्येन्दो बिंबसो
वर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्यात्॥ दुःस्वप्नकुस्वप्नेमारुस्वर्णं दद्यागच्छेत्स्वेच्छा
स्तिः॥१००॥ अथ शकुनानि॥ विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थ
पद्मांबरं॥ वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलावद्धैकपश्वामिषं॥ सद्वाक्यं कु
सुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यकारत्नोष्णीषसितोक्षमद्यसं

शिवः
५

सुतस्त्री दीप्तवैश्यो नरः ॥१०१॥ प्रादक्षिणे जनचौतवस्त्ररत्नको मीना असि
दासनं सा वरोद नवक्षितिं ध्वज मुख्य मधु छागास्त्र गोरोचनं। भारद्वाज
स्त्या नवेदनिन दामां गत्मगीता कुष्णा द्रष्टारस स्फलदाः प्रयाणसम
येरि कोघटः स्वानुगः ॥१२॥ वंध्या चेमितुषास्थि सर्पिलव नांगारेधन ली
व विट् तैलोन्मत्त वसौषधारिजि टिलप्रवाट तृण व्याधिताः ॥ नग्ना
भ्यक्त विमुक्त केशपतित नंगच्छुधा तै प्रसूक ॥ स्त्री पुष्प सरट स्वगृह
दहनं मार्जारयुद्धक्षुतं ॥४॥ कापायी गुडतक्र पंगु विधवा कुब्जा कुटं
वैकं लिवंत्स्यादेः खलनं तुलायुसमर कूष्मानिधा न्यानिच ॥ कपीसंव
मनं च गर्द नरवो दर्शोति रुदगर्भिणी मुंडार्द्रीवर दुर्वचोंधवधिरो द

कानदृष्टाशुभाः॥१०५॥ गोधाजाहकश्वकराः द्विप्रासकानां कीर्त्तनं शोभनंनो

क्तानदृष्टाशुभाः॥ न घुत्तार नयप्रवेशसमरेन

ष्टादोनवि लोकनंचकपिरूक्षाणां ततोन्यथा॥ न घुत्तार नयप्रवेशसमरेन

श्यार्थसंवीक्षणोव्यसप्तापाकुनानपेक्षणविधौयात्रो॥ हिताप्रोक्तनाः॥६॥ वा

मांगेक्रोकिलापल्लीपोतकीम्रकुरीरला॥ पिंगलाछुछुषाम्बेष्टा शिवाषु

रुषसंज्ञकाः॥७॥ छिक्करप्यकोभासःश्रीकंगेवानरोरुरुः॥ स्त्रीसंज्ञकाः

काकारिष्ठा स्थान सुदक्षिणाशुभाः॥८॥ प्रदक्षिणगताश्रेष्ठायात्रायां मृग

पक्षिणः॥ श्रोजामन्याव्रजंतोपिधन्यावामेस्वरः स्वरः॥९॥ आघेपशकुने

स्थित्वाप्राणानेकादशव्रजेत्॥ द्वितीयेषोडशप्राणांस्तृतीयेनक्कचिद्व्रजे

त्॥१०॥ यात्रानिवृत्तौनगरप्रवेशनं मृदुध्रुवैःक्षिप्रचरैःपुनर्गमः॥ द्वीशे

शिवः

५८

नले दारुणा ने तथोग्र नेष्टी गेह पुत्राम्न विनाशनं क्रमात्॥ ११॥ अथ नष्टमास
तिथिकाल वासरो न वृष्टलग्नमुखासितज्ञ दिक्कपाः॥ भृगुवक्रलाद्विपरिघा
खादुकास्यातुजाऽप्योच मपि चोत्साबादिकं॥ १२॥ मस्तुपञ्चरिक्तरवित
कूसंरव्यकात्तिथयुग्मसौरिरविभौमवा सराः॥ अपिवामपृष्ठगविधुस्तथा
डलोवसुपंचकात्विजिदथापिदक्षिणे॥ १३॥ लग्ने जन्मर्क्षीनन्वोर्मि तिगरू
मद्विलक्षौच्च षष्ठंतदीप्ताबा लग्ने कुंजमी नर्क्षनवलवत न्यापिपृष्टोदयं
च॥ पृष्ठाप्रासंस्थमर्क्षंदग्धामश्यानिरंथोसप्तमेवापिकाव्यः केंद्रेवकाश्च व
त्रिग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्च व नेष्टा॥ ११४॥ इति श्रीमद्देवज्ञानंतसु
तदेवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ यात्राप्रकरणं मष्टमं॥ अथ वास्तु

प्रकरणं॥ यज्ञं घंकसुतेष्टादि ग्मित २१८।१५।९९।१० मसौग्राम: श्रुतोनामभात्
स्वंवुगीह्रिगुणंह्रि यायपरवगींग्रंग जैः ८ शोषितो का क्रिन्या स्त्वनसोप्स्वनह्रि
वरत्नायस्याधिकामोर्थदो ६थ द्वारां ह्रि जवैभ्र ऊन्परा शीनां ह्रिर्वेवितः॥१
॥ गोसिंहूनक्र मिथुनं निवसेन्तमध्येया मसा फर्क्कि कुंभोलि सर्वागणा
श्चा॥ कर्कोधि नस्तुलममेषघटाश्चत हृ ढूगीः स्वपंच मपराबलि नसुरै
घ्याः॥२॥ एकोनितेषृर्स्ह्रितादिह्नितिथ्यो ९५२ रूपोनितेष्टान्पहतंदुनागैः
८९युक्ताघनेष्टा पियुताविज्ञा ऊपाप्विनिः २१५ पूषमितो ह्रिपिंडः
॥३॥ स्वेष्टाय नक्षत्र नवोयदेघ्नी ह्रह्रिहृतिविरुतिह्रद्वेदी घी१ म्याय
ध्वजो १ धूम्र २ हरि ३ स्व ४ गो ५ रवरै ६ न ७ ध्वांक्ष का: ८ पिंड इह्राष्टशोधि
ता

पिंव:
५८

| पू आ | द | नै | प | वा | उ | ई | दिशु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग मा | सि | स्वा | शु | न | ह | मे | वलित |

| ईशान ११ न व सेत कुजु | ४।८।१२ घा रं पू वं दि न | आग्नि ५२ न व सेत |
|---|---|---|
| १।५।९ घा उत्तरे नव सेत | मध्ये मा न २।५।११।७।३ | २।६।१० घा रं द नव से |
| वायव्य कौ न मा जीर | ३।७।११ घा रं प ८ नव | नैऋत्य को ४ नव |

| पूर्व | दक्षि | प | उ |
|---|---|---|---|
| ध्वजं प २ गत्ते | सिंगु जौ | ध्वने | ध्वजे सिंहे |

| पूर्व | दक्षि | पश्चिम | उत्तर | पूर्वेषु | वृषपवेषु | गजे म्र | ध्वने | सिंह स |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ८ | पूर्वांका: | सूर्य गहेषु | चैद्र सि | ध्वजेग द्विज हृहृ सुखं | शुक्रस्य वलिस्य |
| १ | | | | | | | | |

धरेषु एषां ध्वजा धायानां विशेषकु रेकथिते निर्वले स्त्री चे एषां नाशु॥

ते॥ ४॥ ध्वजाधिकाः सर्वदिक्षु ध्वजे मुखं कार्यं द्वारे पूर्वयमोत्तरे तथा॥ प्रा
च्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजे ऽथवा पश्चाद्द्वक् पूर्वयमे द्विजादितः॥ ५॥ गृहे पु
तस्त्री सुतवित्तनाशो केन्द्रेऽपि कविबलेऽस्तनीचे॥ कर्तुः स्थितिर्नो
विधिवास्तुनोऽन्ये पुरस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात्॥ नंना गतश्च व्ययई रितो
सौ ध्रुवादि नामा क्षरयुक् सपिंडः॥ तच्चोगुणोरिंद्र कृतां न रूप समुणाभ
वेयु नष्ट्रोन्तकोत्र॥ ७॥ दिक्षु पूर्वादितः प्रणाला ध्रुवाद्यः ९ द्वौ २ कृता ४
गजाः ८ प्रणाला ध्रुवांक संयोगाः सैको वेश्म ध्रुवादिकं॥ ८॥ ध्रुवधान्ये
२ जय ३ नंदौ ४ खर ५ कांत ६ मनोरमं ७ सुमुख ८ दुर्मुखो ९ ग्रम् १० रिपु
दं ११ वित्तद १२ नाश १३ आक्रंदं १४ विपुल १५ विजयाख्ये १६ स्यात्॥ ९॥

शिवः
६०

119

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रुवं | धान्यं | जयः | नंदं | खरं | कांतं | मनोरमं | सुमुखं | दुर्मुखं | उग्रं | रिपुदं | वित्त | नाश | आक्रंद | विपु | विजयं |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ |

| आय | वा | अंश | ध | ऋ | न | ति | यो | ता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ६ | ८ | ३ | ८ | ८ | ४ | ८ |
| ८ | ७ | ९ | १२ | ८ | २७ | १५ | २७ | २० |

तिथ्यर्कशाष्टिगोरुद्वाणाक्षे ५।१२।८।१६
।८।११।१४ नामाक्षरत्रयं। ...ध्नं ध्रुवं ग
दिग्वक्तिविश्वेषुद्यौ ९।२।४।५।६।१०।३।१५
नगे ७ व्ययः ॥१०॥ पिंडे नवांद् ८ कें ९ गदुग
जात्यग्नि ३ नाग ८ नागा ८ ष्टि ८ नागेंदि

गुणितेक्रमेण॥ विभाजितेनागट८ नगा७ कुर१ सूर्य १२ नाग८ र्क्षे २७ तिथ्य १५ र्क्षै २७ खचानुनिघ्न १२०॥ ११॥ आयो वारां शकोद्द व्यमम्ण मम्लांतिथियुतिः॥ १ आयुश्चाथ गृहे प्राक्सगृहान्नेक्यम् तिरुदं॥ १२॥ गेहाद्यारंस्नेकूना द्व त्मणी र्वेसमे ३ दी द्वौ वेदनै ४ रग्रपादे॥ अन्यं वेदैः प्रथपादौ स्थिरलंस मेः ३ द्व द्वेष्ट्री युगेर्दक्षकुक्षौ॥ १३॥ नाभौ रामैः ३ पुक्षगोः स्वामिनाग्रो वेदै नै स्विवामकुक्षौ मुखस्थैः॥ रामैः ३ पीडासंततं वार्कंधिष्ण्या दस्वे ७ रुद्रै ११ दिग्भि १० रुक्षं घसम्सत्ता॥ १४॥ कुंनकेफाल्गुने प्राग
परमुखं गृहं आवृणो सिंहकर्के
पौषे नक्रे चये याम्यान्तरमुखसद्नं

शिव:
६२

गोऽजगे कैश्चराघो। मार्गे ऽज्का
लिगे सक्रूवमत्स्वरूण स्वाति
नस्वकृपुष्पे: स्तृतौ गेहं त्वदि
त्यां हरिभविधित्तयोस्त्व श
स्त: प्रवेश:॥१५॥ केश्चिन्मेष
र वोभधो वृषभगे ऽप्येष्वेप्युचो
कर्कटे। नाद्रे सिंहगते घटेऽ
श्वयुजि चोर्ज्जे नौ मृगे पौष
के। माघे न कुंभघटेश्रुतंतं निगदितं गेहं तयोर्ज्जे निसल्कन्यायां च नपौषतु

प्यापि चत कृष्णादि मासान्नवेत् ॥ १६ ॥ फलेंतुतः प्राग्वदनं नवम्यादिषु ऊँत रस्यां त्वष्णु पश्चि मास्यां ॥ दक्षिणादितः शुक्लकरलेन नवम्यादौ दक्षिणस्यां नभ्रमं वदंति ॥ नोमा कृ रिक्तामाघ नेचरो नागो वृषिप के ॥ व्यष्टौ लस्ये नैर्गेहि रंभस्थायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥ दे कालयेगेह विधौज नाश्रयेरा दोर्मुखं

| ईशा | वायव्य | नैरृत्य | आग्नेय | दिशासु ॥ |
|---|---|---|---|---|
| १।२।१२ | ३।४।५ | ६।७।८ | ९।१०।११ | देवगृह |
| ५।६ | ८।९।१० | ११।१२।२ | २।३।४ | गृहकृत्स |
| १०।११ २२ | १२ ३ | ४।५ ६ | ७।८।९ | जलाश्रय |

शानु दिशो विलोम तः ॥ मीना कृ सिंह कुम्भगार्क तह्रिनै खातो मुखा स्तष्ट विदिकस्थानवेत्

शिवः

॥१९॥ कूपेवास्तोर्मि चंदे प्योर्थे नाशा ह्यीप्रा न्पा द्रोपुष्टि रैश्वर्य वृद्धिः॥ नाशाः
स्नोस्त्रीवि नाशो म तिश्च प्राय स्नीडा शात्रुन स्याद्व सौ ख्यं॥ २०॥ स्नानस्या
पा कप्राय नास्त्रनु जेश्वधान्य नंडा रदै वतग स्नाणि चपर्वं नसु:॥ तन्म
ध्यतश्च मप ना डापुरीषविद्यास्मासा स्वराद नर तोषध सर्वधाम:॥२१॥
जीवार्क विच्छू ऋश नेष्वरेषु लग्नादि या मित्रमु ख ७१८ त्रिगे २ षु॥ स्थि
तिः सतं स्याच्छूर दां सिता कीरि ज्येत नुत्र्यंग सुते॥ ३॥ ६॥ ५ शत हृ २००
॥२२॥ लग्नां १ वराये १० षु ९ सगुद्रमानुजि: कें द्रे गुरो १।४।१।१० वर्ष
शतायुरालय:॥ वं क्रो ४ गुरु व्योम्नि १० प्राप्ती कुजार्क जो लाने ९ त
दा प्रीतिम मायुरालय:॥२३॥ स्वोच्चे भृ कै लग्नै वा गुरौ वेस्म गते

धौ

यवा॥ शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्मणाद्युक्त चिरं गृहं॥२४॥ द्यूनां वरे यदे केंद्रो
पिपरां शास्योपि गृहो गृहं॥ चंद्रात्तयारक्त स्वस्थं कुर्याच्चेद्दृष्टो योबलः॥२५

| कूपे पुष्टि | कूए स्वे | पुत्र नाश |
|---|---|---|
| कूपे सौख्यं | अर्थ ना | स्त्री नाश |
| कूपे शत्रु ना | जल क्षी | गृहे शम |

| रवे गृह | कंपीन गृह | स्नान | मथन | पा |
|---|---|---|---|---|
| भागो बंध | ॥षोडशचक्रं॥ | | | घात |
| भोज | | | | शय |
| रत गृह | | | | पुरीष |
| धाम | कोप | भोजन | शस्त्राभ्यास | शस्त्र |

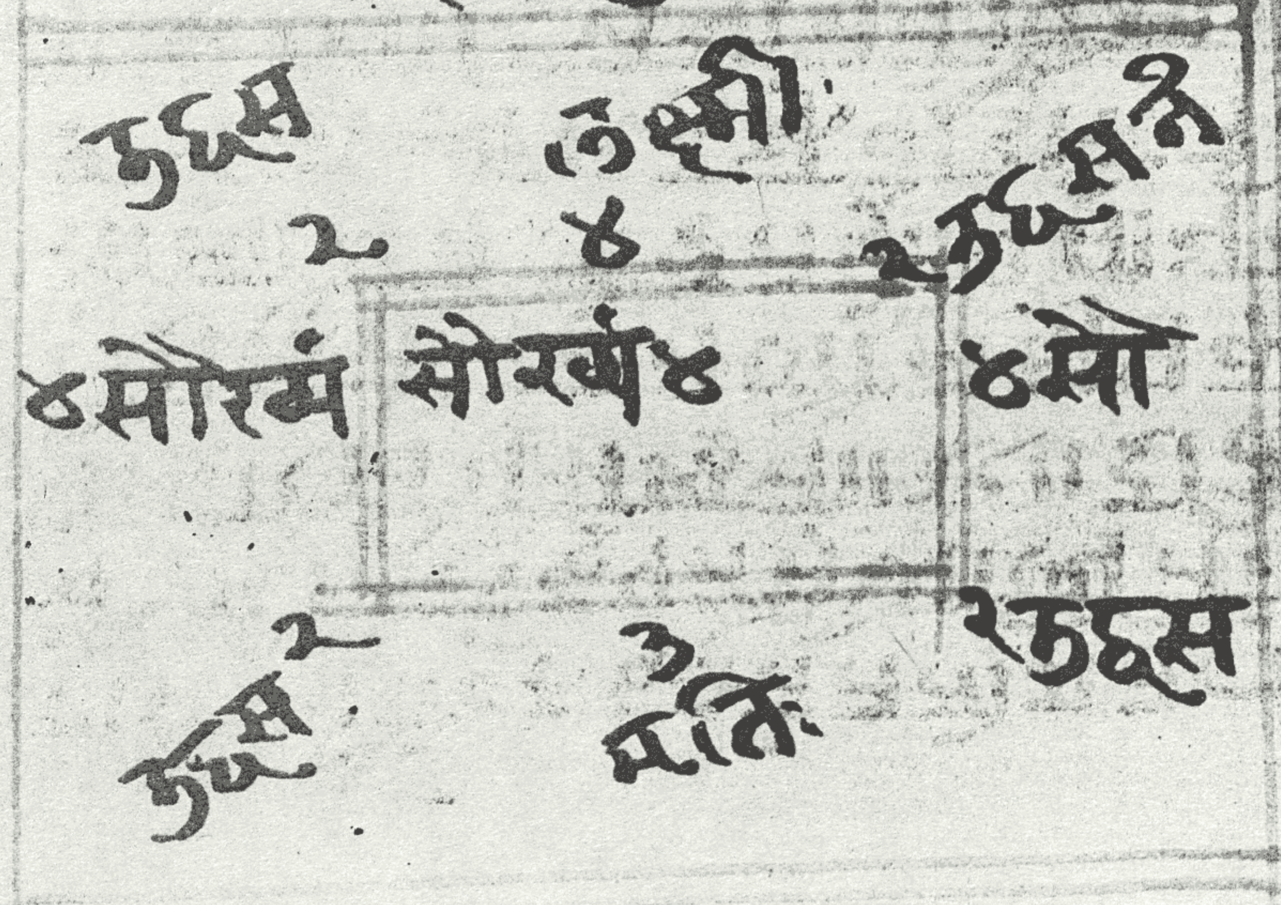
| सू | स | बु | शु | श |
|---|---|---|---|---|
| १ | ६ | ७ | ४ | ३ |
| शु | बु | स | वृ | |
| १ | १० | ११ | ४ १० | |
| बृ | चं | मं | श | |
| ४ | १० | ११ | १२ | |

वर्षायुः १००

वर्षायुः १००

ष्ठिवः ६२

॥ पुष्पार्कवेंदुदरिसपजितैः सजीवैस्तद्धारोणचक्रतं सुतराऽपदंस्यात्॥ [illegible]
षाध्वितस्त्वसुपा॥ षिषि वैस्तद्धकेवीरोषि तुस्पचलतंथनधामदंस्यात्
॥२६॥ मारे कुरेऽपांत्स्य मघांबुमूलैः कौ
ज्ञोह्निस्माब्दिनसुतार्द्रिदंस्यात्॥ सज्ञैः
कदंस्वार्प्यमतक्षदस्तैर्हस्येचवारेसुखप्र
दंस्यात्॥२७॥ प्रजेकपाहिबुध्न्यपार्क
मित्रानत्नांतकैः॥ समेदंमैदवारेस्या
ह्लौख्यतथुतगर्भ्हा॥२८॥ सूर्यसौद्यु
गनैः४ षिरसपफलंलक्ष्मीस्तनः कौ



ण मे न्ती गेह दृढ समंततो गजाष्ट मिते: पुणरवा सु सौख्यं भवेत्॥ देहल्यां गुण
नेत्रमितिर्गदृष्टा तेर्मि आप्यि नैर्वदिग्भे: सौख्यं च कामिदुं विलोक्य सुधि
या द्वारं विधेयं सुजनैः॥२९॥ इति श्री मद्दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञराम विरचि
ते मुहूर्तचिंतामणौ वास्तुप्रकरणं नवमं॥ अथ गृहप्रवेशप्रकरणं॥
सौम्यायने ज्येष्ठतपोंत्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नववेश्मवेशः॥ स्याद्वा
शांतं द्वास्थ मृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे॥१॥ जीर्णे
गृहे ग्न्यादिभयान्नवे पि मार्गोर्जयोः श्रावणकेपि स स्यात्॥ वेशोंबु
पेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणात्र॥२॥ मृदुध्रुवक्षिप्र
चरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत्॥ त्रिकोणकेन्द्रायधन

शिवः
५४

त्रिगैः९।५।१।७।११।१०।११।२।३ स्मृ मोक्षिबंध लाभोपगतेषु।६।११।१२ स्त्रपा

पूर्केः॥३॥ आदिग्धांबुरंध्रेविज्ञनुनेमि स्तौमकौ ररिक्का चर चैत्रदर्शे॥ अ

ग्नेसुपर्ला कलनर्णा ह्विजाऽभ्रकत्वाविप्रो हूस्म भक्र टस्यु रहौ॥६॥ वामोरवि

| पूर्वीसु | याम्य | पश्चिम | उत्तर | गत्हसुरवो |
|---|---|---|---|---|
| उग्ना | ९पाद् | २।३।४ | ११।१२ | रवो स्थिले |
| १।८।१७<br>११।१२ | ७।८।१ | ५।६ | १०।२।३ | वाममवि |
| पूर्णा | नंदा | नद्रा | जया | स्मृ नातिथि |

र्मासु सुतार्थ लानतो९के पंचमेघ्राग्वदने गत्हस्युने नंदादिकेयाम्य जलोत्तरा ननो।५॥ वक्रेष्ठ रविभा

लवेष्ठासमयेकुंत्रोग्निदाह: कृता४ प्राच्यामुद्धमेनंकृता४ यमुगलाला

नः कृतापश्चिमे॥ श्रीवेंदा४ कलिरुत्तरेयुग४ मिलागनेंविनाश्ले

नाणोगुदेरा मस्थैर्यमतः स्थिरत्वमनला: कंठे
भवेत्सर्वदा ॥ ६ ॥ इति कलग्नवास्तु ॥ एवं सुलग्ने
स्वगेहे प्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तं ।
प्रीत्य ज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान्नृराजार्चयेद्भू
मिहिरण्यवस्त्रैः ॥ ७ ॥ आसीद्धर्मपुरे षडंग
निगमाध्येतृद्विजे मंडिते ज्योतिर्वित्तिल
कः फणीन्द्ररचिते भाष्येऽकृताति श्रमः ॥
तत्रजातकसंहिताऽगणितकृन्माम्नोम
हान्नुजातकीर्तिं कृतिदेववाक्यविलस

रविकृता ४
दोरू
३ स्थिर
०फलग्न
स्थैर्य
पश्री ४
३ऊ ४
फलं ४

शिव:
६५

129

बुद्धिः सचिंतामणिः॥ ज्योतिर्विद्गणवंदितांघ्रिकमलस्तत्सूनुराप्तो कृ-
तीं नाम्नानंत इति प्रथामधिगतो भूमंडलाहस्करः॥ योरम्यां जनिपद्ध-
तिं समकरोद्दुष्टापहां यच्छ्रुतिं टीकां चोत्तमकामधेनुगणितेऽका-
र्षीत्सतांप्रीतये॥१४॥ तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकंठानुजो गणे-
शपदपंकजं हृदि निधाय रामाभिधः॥ गिरीशनगरे भुजभुजेषु
चंद्रै १५२२ र्मिते शके विनिरमादिमं खलु मुहूर्तचिंतामणिं॥१५॥
इति श्रीमद्दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ गृ-
हप्रवेशप्रकरणं दशमं समाप्तं॥१०॥ श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ श्री॥

[OrderDescription]
,CREATED=21.09.20 15:49
,TRANSFERRED=2020/09/21 at 16:07:35
,PAGES=130
,TYPE=STD
,NAME=S0003640
,Book Name=M-1762-MUTURATCHINTAMANI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF

FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF

FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF

FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF
,FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF
,FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF
,FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF

FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF
,FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF
,FILE111=00000111.TIF
,FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF
,FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF
,FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF
,FILE130=00000130.TIF
,